चन्दामामा
मई १९८९

ऑरेंज □ पाइनेपिल □ लाइम □ शाही गुलाब □ काला खट्टा □ कूल खस □ केसर इलायची □ मसाला सोडा (जलजीरा) □ टूटी-फ्रूटी □ मैंगो राइप □ केप ग्लोरी

ताज़गीभरा रसना

11 प्यारे स्वाद, प्यारे दाम में.

पढ़िये डायमंड कामिक्स और जीतिये 2 लाख रु० के नकद इनाम
कार्टूनिस्ट प्राण का
प्राण
बिल्लू और फिल्म शो
मोटू पतलू और फिल्म की शूटिंग
डब्बू जी के धमाके
अंकुर और गलीचा चोर
हँसी का खजाना
डायमंड कामिक्स में
मूल्य प्रत्येक 5/-
महाबली शाका और तोप का कमाल
डायमंड मिनी कामिक्स
चाचा भतीजा और डाक बंगला
मामा मांजा और दो मूर्ख
मोटू छोटू और मुसीबत ही मुसीबत
लेखक राजीव
रहस्य रोमांच व साहसिक घटनाओं से भरपूर
नई बाल पाकेट बुक्स
चाचा चौधरी और पीलू की करामात
पिंकी और गहनों के चोर
अंकुर और डाकुओं से टक्कर
फौलादी सिंह और कांच का देश
मोटू छोटू और जूता कम्पनी
महाबली शाका और आदमखोरों का खजाना
चाचा भतीजा और जादूगर की हत्या
मीकू और मीसी के हीरे
मूल्य प्रत्येक 3/-
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
मूल्य प्रत्येक 12/-
तेनालीराम
राजन इकबाल III
फौलादी सिंह V
चाचा भतीजा IV
डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

PARRYS
Parry's
प्रिय दोस्तों !
छुट्टियां फिर आ पहुंचीं तो मैंने सोचा कि ऐसी पेज बनाने का इससे बढ़िया समय और भला क्या होगा? मेरे साथियों (टॉफी, लॉलीपॉप, कॉफी बाइट और कैरामिल्क) ने मिल कर एक बड़ा मज़ेदार हॉलीडे पेज बनाया है ... छुट्टियों में तुम इसका भी मज़ा लो!
Parry's
THE KING OF SWEETS
कागज़ों को नचाएं तो कैसा रहे ?
यह है नाच का एक अनोखा कार्यक्रम. बस तुम्हें सिर्फ इतना करना है कि कागज पर छोटे-छोटे पात्रों की तस्वीर खींच लो जिनकी ऊंचाई करीब ९ सेंटीमीटर हो. लेकिन इतना ध्यान रहे कि उन पात्रों की टांगें न हों. (चित्र-१ देखो). जब तस्वीरें बन जाएं, उनमें रंग भर दो और उन्हें आकार के मुताबिक काट लो. जहां पर टांगें होनी चाहिए थीं, वहां पर सावधानी के साथ छेद कर दो (चित्र-२ देखो). अब अपनी पहली व दूसरी उंगलियां इन छेदों में डालो (देखो चित्र-३) और एक पात्र को बाएं हाथ की उंगलियों से तथा दूसरे को दाएं हाथ की उंगलियों से नचाओ. तुम अपने दोस्तों से भी नाचने वाले कागज के पात्र बनवा सकते हो और फिर उनके साथ नृत्य-प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हो.
Fig: 1
Fig: 2
Fig: 3
CUT AND KEEP

PAGE
पैरीज़ टॉफ़ियां और बिस्किट किसी हर को भायें.
सांप कैसे नचाया जाता है?
तुमने कोई सपेरा तो ज़रूर देखा होगा जो बीन के संगीत से सांप को नचाया करता है. लेकिन असलियत यह है कि सांप संगीत सुन ही नहीं सकता, संगीत क्या वह कुछ भी नहीं सुन सकता. वह बिल्कुल बहरा होता है. जब सपेरा उसे नचाता है तो वह अपने पैर से ज़मीन पर थपकी देता है और खुद झूमता है. थपकियों के कंपन की ताल पर सांप हिलने लगता है और ठीक सपेरे की तरह झूमने लगता है. इसी को हम सांप का झूमना और नाचना समझते हैं.
देखो यारो, यह जादुई पेंसिल!
एक बड़े गिलास में थोड़ा पानी भर दो. इस गिलास के पीछे एक पेंसिल रख दो. अब अगर तुम गिलास के आगे से पेंसिल की तरफ देखोगे तो एक अजब नज़ारा देखोगे — वहां अचानक दो पेंसिलें दिखाई देंगी. तुम अपनी दाईं आंख बंद करके देखोगे तो बाईं तरफ की पेंसिल गायब हो जाएगी. बाईं से देखोगे तो दाईं गायब. ऐसा, पानी में रोशनी के वक्रीकरण के कारण होता है. वक्रीकरण के बारे में तुमने भौतिक शास्त्र यानी फिज़िक्स में पढ़ा होगा. सीधी सी बात है कि जब प्रकाश की किरणें, पानी या गिलास जैसी किसी चीज से होकर गुज़रती हैं तो उनकी दिशा बदल जाती है. इस तरह तुम मज़े से अपने दोस्तों पर जादूगर होने का रौब जमा सकते हो. बात है न मज़ेदार?
Parry's
THE KING OF SWEETS
HTA 7248

अब सेरेलॅक®

सब्ज़ियों की ख़ूबियों के साथ

आपके शिशु के लिए सेरेलॅक का एक और अनूठा लाभ

पेश है नया सेरेलॅक वेजिटेबल—गाजरों और टमाटरों के गुणों से भरपूर। आपके लिए—अपने शिशु के आहार में विविधता लाने के लिए—जैसे जैसे वो नए स्वाद चखता है।

सेरेलॅक वेजिटेबल में सेरेलॅक के सभी गुण मौजूद है—प्रत्येक आहार में संपूर्ण पोषाहार, मनभावन स्वाद और झटपट तैयार।

४ महीने की आयु से आपके शिशु को दुग्ध आहार के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है। उसे सेरेलॅक का लाभ दीजिए। उसे ४ महीने की आयु से सेरेलॅक व्हीट देना शुरू कीजिए। ६ महीने की आयु से नया सेरेलॅक वेजिटेबल या सेरेलॅक ऐपॅल या सेरेलॅक ऑरेन्ज दीजिए—जो भी आपको पसंद हो।

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार।

RK SWAMY/FSL/5461 HIN

सेरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

A CHANDAMAMA PUBLICATION
चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस अंक के साथ "पाँच प्रश्न" धारावाही कहानी समाप्त होती है। आगामी अंक से "पिता और पुत्र" शीर्षक नयी धारावाही कहानी आरंभ होगी। वैसे यह कहानी १९४७-४८ में प्रकाशित होकर पाठकों की खूब प्रशंसा पा चुकी है और चर्चित भी हुई है। उम्र के साथ जीवन का जो अनुभव बनता है, उससे दो पीढ़ियों के बीच, पिता-पुत्र के बीच, जो भेदभाव या वैमनस्य पैदा होता है, उसका वर्णन हास्य एवम् व्यंगात्मक शैली से इस कहानी में प्रस्तुत है। सभी जानते हैं कि दो पीढ़ियों को बीच विचारों का अंतर हो ही जाता है। हमारा विश्वास है कि उक्त कहानी से इस पीढ़ी के पाठकों का भरपूर मनोरंजन होगा।
वर्ष : ४१ मई १९८९ अंक : ९
एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००

TRAVEL INDIA
Fun is
ट्रैवल इंडिया गेम
'फन इज़' पोस्टर सेट
MAGGI
क्लब
1989 की मौज-बहार!
नए-नए उपहार!

सचाई का मूल्य

शिबपुरी गाँव के निवासी गोविन्द प्रसाद के घर एक रात को एक डाकू घुस आया । उसने गोविन्द प्रसाद तथा उसकी पत्नी को छुरी दिखाकर धमकी दी, - "तुम्हारे घर में सोने के गहने व रुपये कहाँ रखे हैं बताओ; वरना तुम्हारे प्राणों की ख़ैर नहीं ।"

"हमारे घर में लूटने जैसा कुछ भी नहीं है ।" पति-पत्नी ने सचाई को छिपाते हुए उत्तर दिया ।

इतने में उनके दस वर्ष की उम्र के बेटे ने डाकू से कहा, "मैं सच बता देता हूँ । देखो, सामने वाले लकड़ी के बक्से में सोने की बीस गिन्नियाँ हैं; बस, और कुछ नहीं ।"

डाकू ने सारा घर छान डाला । उसे केवल वे सोने की बीस गिन्नियाँ ही प्राप्त हुईं । इस पर उस डाकू ने लड़के से पूछा, "तुम ने अपने माता-पिता के जैसे झूठ क्यों नहीं कहा, कि घर में कुछ भी नहीं है ? सच क्यों बताया ?"

इस पर लड़के ने डाकू से कहा, "मेरे माँ-बाप सच और झूठ का मूल्य नहीं जानते । मैं उसका मूल्य भली भाँति जानता हूँ । इसलिये सच बताया ।"

"तब तो बताओ, सच का मूल्य कितना और झूठ का कितना ?" डाकू ने पूछा ।

"सच का मूल्य मेरे माता-पिता के प्राण हैं और झूठ का मूल्य है बीस सोने की गिन्नियाँ । सच बोलकर मैं अपने माता-पिता के प्राण खरीद सका हूँ, मगर झूठ बोलकर मैं केवल सोने की बीस गिन्नियाँ पा सकता था ।" लड़के ने झट उत्तर दिया ।

लड़के की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न हो, डाकू ने सोने के वे बीस सिक्के उसके हाथ पर रखे और उसने अपना रास्ता नापा ।

पिशाचों का उपकार
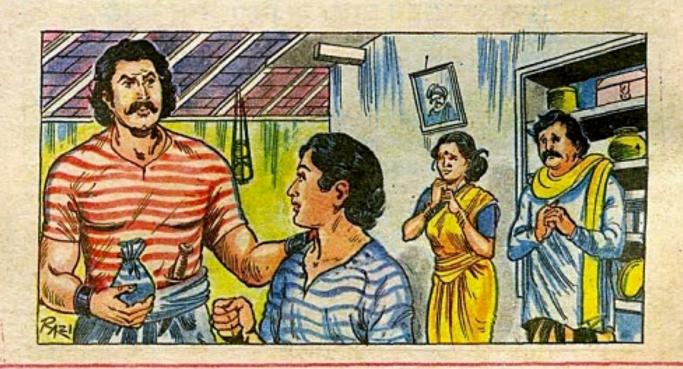
मंगलपुर गाँव के समीप एक घना जंगल था । उस जंगल के एक बरगद के पेड़पर दो पिशाच रहते थे । दोनों पिशाच बड़े ही परोपकारी व दयालु थे । एक दिन कड़ी दुपहरी में दोनों पिशाच ऊँघ रहे थे, तब अचानक किसी आहट से वे जाग पड़े ।

उन्होंने देखा कि एक हट्टाकट्टा आदमी बरगद पर चढ़ रहा है । उसने कमर में बँधी अशर्फियों की एक पोटली निकाली और उसे उस पेड़ के खोखले में छिपा दिया । इसके बाद पेड़ से उतरकर वह वहाँ से चल पड़ा । पिशाचों ने ताड़ लिया कि ज़रूर उस ताक़तवर आदमी ने वह पोटली कहीं से चुरायी है । इसलिये वे दोनों तत्काल पेड़ से उतर कर गुप्त रूप से उसका पीछा करने लगे ।

वह हट्टाकट्टा युवक मंगलपुर के निवासी शामलाल के घर में चला गया । पिशाच भी उसके पीछे उसी घर में घुस पड़े और घर की अटारी पर जा बैठे । शामलाल ने उस बलिष्ट व्यक्ति की ओर देखते हुए पूछा, "अरे भीमदास, मेरी अलमारी में रखी अशर्फियों की एक पोटली दिखाई नहीं दे रही है ! कभी से खोज रहा हूँ मैं । सारा घर छान डाला । तुमने कहीं देखी है वह पोटली ?"

"क्या कह रहे हैं मालिक ? अशर्फियों की पोटली खो गयी ?" भीमदास ने आश्चर्य प्रकट किया और वह भी खोजने का नाटक करने लगा ।

फिर एक बार दोनों ने मिलकर सारा घर ढूँढ़ा और व्याकुल होकर शामलाल कहने लगा, "कल ही बाज़ार में चन्दनदास से मेरी मुलाक़ात हो गयी । और उसीने मेरे हाथ अशर्फियों की वह पोटली सौंपी थी । उसने मेरे साथ जो चीज़ें गिरवी रखी थी, उन्हें लेने वह अब किसी भी समय आ धमकेगा । "

"मालिक, चन्दनदास ने जब वह पोटली आप के हाथ में धर दी, तब वहाँ पर क्या कोई और व्यक्ति भी साक्षी था ?" भीमदास ने

ऊर्मिला विद्याव्रत
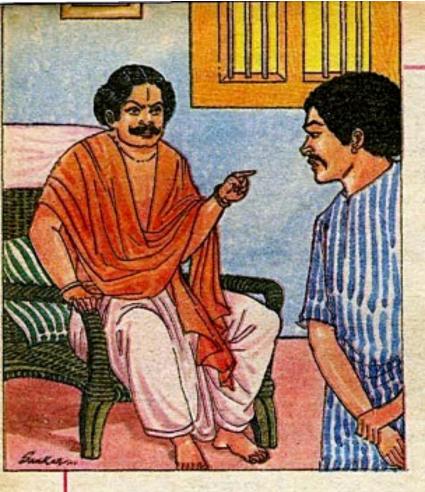
पूछा ।

"ना, कोई भी नहीं था, मगर इससे क्या ?" शामलाल ने कहा ।

"तब तो एक काम कीजिये मालिक । आप चन्दनदास को धमकाकर कहिये कि उसने आप को धन दिया ही नहीं है । यदि उसने कुछ हो-हल्ला मचाने की कोशिश की, तो बाकी काम मैं निबटा लूँगा । '' इतना शामलाल को समझाकर भीमदास ने अपनी मूँछों को ताव दिया ।

यह सलाह शामलाल को जँची । इसी बीच चन्दनदास वहाँ आ टपका और अपनी गिरवी रखी चीज़ें वह माँगने लगा ।

शामलाल ने इस पर आश्चर्य दिखाते हुए बड़े इतमीनान से कहा, "चन्दनदास, अरे तुम यह क्या कह रहे हो ? तुम्हें यह नहीं मालूम, कि गिरवी रखी चीज़ें तब वापस दी जाती हैं, जब कि कोई अपना कर्ज़ा चुकाता है ?''

शामलाल की ये बातें सुनकर चन्दनदास एकदम हड़बड़ा गया और उनसे याद दिलाई कि, "कल ही तो मैंने आप को बाज़ार में धन की पोटली सौंप दी है । ''

शामलाल गम्भीर होकर बोला, "तुम कहीं मेरे साथ मज़ाक तो नहीं कर रहे हो ? मुझे तो ऐसे लोगों से सख़्त चिढ़ है । ''

चन्दनदास ने अब शामलाल के मन की बात ताड़ ली । और उसने शामलाल के पैरों पर गिर कर बिनती की, वह गिड़गिड़ाया । लेकिन शामलाल के मन पर इन सब बातों का कोई असर नहीं हुआ । वह अपनी बात पर अटल रहा कि उसे पोटली मिली ही नहीं है । उसने निर्दयता के साथ चन्दनदास को अपने घर से बाहर निकलवाया । उदासी से सिर लटकाकर अपने घर की ओर चलनेवाले चन्दनदास का पिशाचों ने पीछा किया ।

घर पहुँचते ही चन्दनदास की पत्नी ने गिरवी रखी चीज़ें उससे माँगी । इस पर उसने सारा किस्सा अपनी पत्नी को सुनाकर चिन्तित स्वर में कहा, "कल रामसहाय ने मुझे जो धन दिया था, उसे आज शामलाल ने हड़प लिया है । रामसहाय ने मुझको धन दिया है, इस बाद का सबूत ही क्या है ?"

इसी बीच दरवाज़े पर दस्तक हुई । किवाड़ खुलते ही रामसहाय अन्दर घुसा । चन्दनदास ने मुस्कुराकर कहा, "तुमने तो अपनी इकलौती

बेटी की शादी भी करा दी; अब तुम्हें चिन्ता किस बात की'?"

रामसहाय ने भी मुस्कुराकर उसकी ओर देखते हुए कहा, "तुम्हारी मेहरबानी से ही मैंने उस बोझ को उतार दिया है । कल मैंने आप का वह कर्ज़ भी चुका दिया है; मैं इस वक्त तुम से अपने खेत के गिरवी रखे कागज़ लेने आया हूँ ! "

इस पर विस्मय का अभिनय करते हुए चन्दनदास ने कहा, "रामसहाय, कर्ज़ कैसे चुक गया ? तुम धन दोगे, तब न कर्ज़ चुक जाएगा ?"

चन्ददास का जवाब सुनकर रामसहाय अपना सिर पीटने लगा । तिस पर भी चन्दनदास विचलित नहीं हुआ । वह रूखे स्वर में बोला, "रामसहाय, यह मेरी बड़ी भारी भूल थी कि तुम को भुलक्कड के रूप में जानते हुए भी मैंने उधार दिया । अब भी सही, अच्छी तरह से याद करो और जल्दी मेरा कर्ज़ चुका दो, समझे ?"

रामसहाय बेचारा इसपर निरुत्तर हो, आँखों में आँसू भरकर अपने घर की ओर लौट पड़ा । इस धोखाधड़ी से परिचित पिशाचों को लगा कि शामलाल तथा चन्दनदास की धोखाधड़ी की पोल खोलकर रामसहाय की मदद करनी चाहिये । इस विचार के आते ही दोनों पिशाचों ने बुज़ुर्गों जैसा रूप धरा और उन्होंने रामसहाय को उसकी व्याकुलता का कारण पूछा । रामसहाय अपने प्रति हुए अन्याय का किस्सा सुनाकर रो पड़ा ।

पिशाचों ने तत्काल धन से भरी एक पोटली का निर्माण किया और उसे रामसहाय के हाथ सौंपते हुए उसे समझाया कि आगे क्या करना

मैं खुद बहुत परेशान हूँ मेरी इस बीमारी से ।'' यह कहकर रामसहाय ने पिशाचों से प्राप्त वह धन की पोटली चन्दनदास को सौंप दी ।

चन्दनदास ने बड़ी प्रसन्नता से वह पोटली ले ली और रामसहाय के खेतसम्बन्धी दस्तावेज़ उसे दे दिये । रामसहाय खुशी खुशी अपने घर लौट गया ।

चन्दनदास की पत्नी ने यह सारा नाटक देख लिया था । उसने उत्साह में आकर उससे कहा, ''रामसहाय के भुलक्कड़पन का लाभ हमें मिल गया । भुलक्कड़पन के नशे से उसके होश में आने से पहले ही तुम यह धन शामलाल को दे आओ और साथ ही हमारी गिरवी रखी चीज़ें लेते आओ ।''
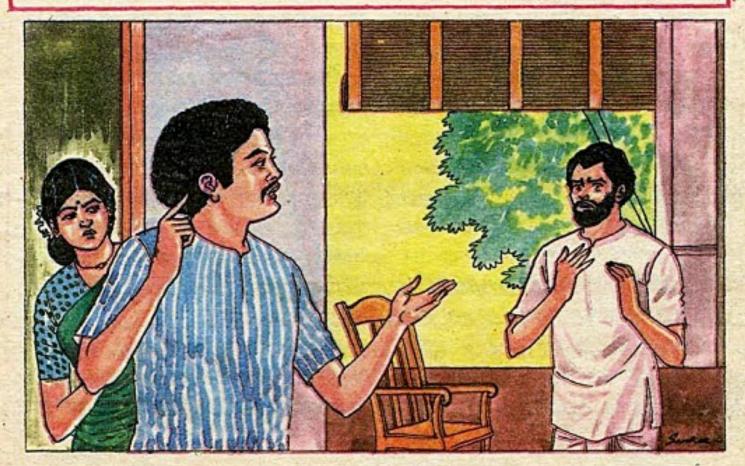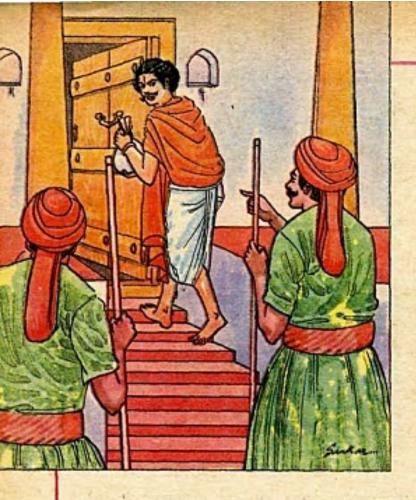
होगा । रामसहाय धन की वह पोटली लेकर चन्दनदास के पास पहुँचा और उसके किवाड़पर दस्तक दी ।

चन्दनदास ने किवाड़ खोला और सामने रामसहाय को खड़ा देख, ''कहो, तुम फिर क्यों आये हो ?'' यह कहकर उस पर बरस पड़ा ।

रामसहाय इतमीनान से बोला, ''मुझे अपने भुलक्कडपन पर तरस आता है । दरअसल थोड़ी देर पहले मैं तुम्हें कर्ज़ की रक़म चुकाने आया था, मगर भूल गया । लो, यह धन लेकर मेरे खेतों के कागज़ात मेरे हवाले कर दो । बुरा मत मानो, मैं तुम्हारा उपकार कभी भूल नहीं सकता । मेरी वजह से तुमको बेकार परेशान होना पड़ा । जाने आजकल यह कैसी विस्मृति की व्यथा मुझे घेरे हुए है

चन्दनदास ने शामलाल के घर जाकर उसे धन देकर उसके यहाँ गिरवी रखी चीज़ें वापस ले लीं ।

चन्दनदास के चले जाने पर शामलाल धन की पोटली लेकर अपने कमरे के भीतर कदम रख ही रहा था कि दो सिपाही वहाँ आ धमके और बोले, ''सेठजी, आप को न्यायाधीश ने तुरन्त न्यायालय में हाज़िर होने का आदेश दिया है, चलो हमारे साथ ।'' सिपाहियों की धमकी सुनकर शामलाल आश्चर्य में आ गया और भीमदास को साथ लेकर वह न्यायालय की ओर चल पड़ा ।

न्यायालय में न्यायाधिकारी की बगल में बुजुर्गों के रूप में पिशाच खड़े थे । न्यायाधीश ने शामलाल से पूछा, ''सुनो, तुम

पर यह अभियोग है कि तुम ने इन बुजुर्गों के यहाँ से सौ अशर्फियाँ चुरायी हैं । क्या यह बात सच है ?''

"यह कैसा अन्याय है । मैंने आज तक इनके चेहरे भी नहीं देखे हैं । '' शामलाल ने विस्मय में आकर कहा।

पिशाचों ने शामलाल की कमर में कसी अशर्फियों की पोटली की ओर इशारा करके कहा, "देखिये महाशय, अशर्फियों की वह पोटली ही हमारी है । ''

"अरे, यह तो सरासर गलत है । इस पोटली में गिरवी की रक़म् है । इस बात का क्या सबूत है, कि यह रक़म तुम्हारी ही है ?'' शामलाल ने पूछा ।

"पोटली की प्रत्येक अशर्फी पर बरगद की मुहर लगी हुई है । यही है मेरा सबूत । '' मुस्कुराते हुए एक पिशाच ने उत्तर दिया ।

न्यायाधीश ने अशर्फियाँ देखी, तो प्रत्येक अशर्फी पर बरगद का चिन्ह अंकित था ! गुस्से में आकर उसने शामलाल से कहा ।

अब शामलाल ने कहा कि वह धन उसे चन्दनदास ने दिया था । चन्दनदास से पूछने पर उसने हंगामा मचाते हुए कहा कि यह दरअसल उसे रामसहाय ने कर्ज़ा चुकाने के लिये दिया है ।

रामसहाय ने बुजुर्गों के वेष में खड़े पिशाच दिखाकर कहा, "चन्दनदास ने मुझे धोखा दिया; मुझे दुखी देखकर इन बुजुर्गों ने मुझे यह धन दिया था । ''

लाचार होकर अब चन्दनदास को अपना अपराध स्वीकार करना पड़ा । उसने न्यायाधीश को शामलाल द्वारा छकाये जाने की
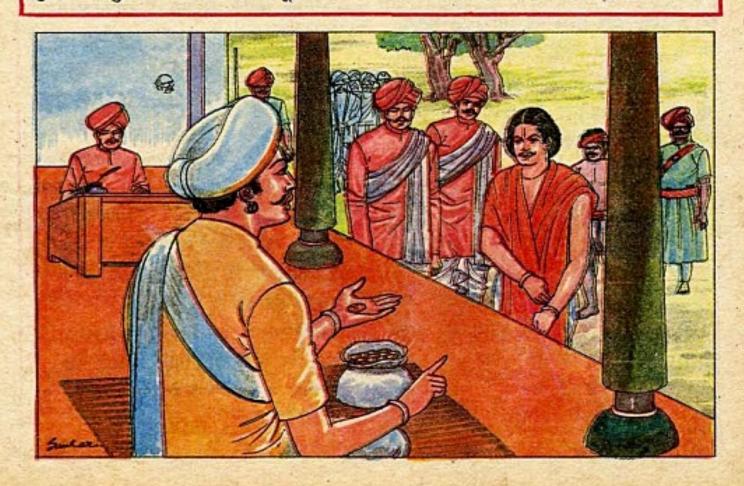
बात बता दी ।

शामलाल डर से काँपने लगा और अपनी ग़लती कबूल करते हुए कहा, "महानुभाव, यह सब इस भीमदास की सलाह के कारण हुआ है ।" और उसने भी अपनी कहानी कह डाली ।

सारा किस्सा सुनने पर न्यायाधीश ने ताड़ लिया कि शामलाल के घर से अशर्फियों की पोटली भीमदास ने ही हड़प ली है । उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए न्यायाधिकारी ने गरज कर कहा, "अरे भीमदास, घर के चोर को ईश्वर भी पकड़ नहीं पाते, यह बात सही है न ?"

विवश होकर भीमदास ने सच्ची बात बता दी । इसके बाद उसने जो जो संकेत बताये उन के आधार पर सिपाही उस बरगद के पास पहुँचे और उसके खोंडर में छिपायी अशर्फियों की पोटली निकालकर ले आये । पोटली उन्होंने न्यायाधीश के सामने रखी ।

उन बुजुर्गों ने न्यायाधीश से कहा, "महानुभाव, लोग अक्सर अपने प्रति हुए नुकसान को दूसरों के सिरपर मढ़कर फायदा उठाने की सोचते हैं । रामसहाय जैसे भोलेभाले आदमी ऐसे लोगों का शिकार बनते हैं । इसी से तरस खाकर हम ने रामसहाय की सहायता की है ।"

न्यायाधीश ने भीमदास, शामलाल व चन्दनदास को उचित दण्ड सुनाये और पिशाचों से पूछा, "तुम दोनों ने हमारे गाँव के दो दगाबाजों को पकड़वा कर एक अन्याय होने से रोका, यह तो खूब रहा । मगर, यह तो बताओ कि इस बात का पता तुम लोगों को कैसे चला ?"

"यदि हम इस सवाल का जवाब देंगे, तो आप भी डर जायेंगे महाराज !" इतना कहकर उन दोनों पिशाचों ने जंगल की राह ली ।

पिशाचों का उत्तर तो न्यायाधीश की समझ में नहीं आया, फिर भी वह अकारण ही हँस पड़ा ।

प्रेम और ईर्ष्या
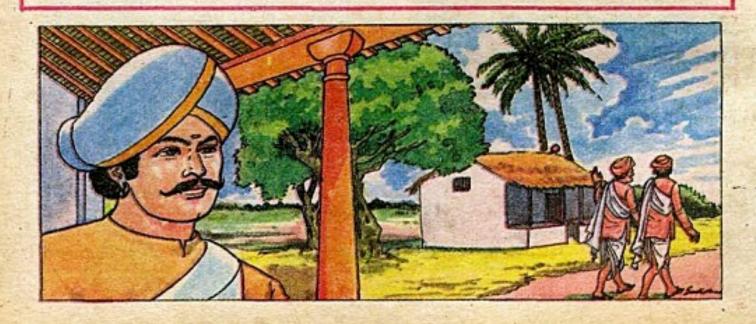
कमल नामक एक युवक बड़ा ही संगीत-प्रेमी था । संगीत का जो भी वाद्य उसके हाथ आता, उस पर साधना द्वारा वह प्रवीणता प्राप्त कर लेता था ।

एक दिन वह नदी में स्नान करके घर लौट रहा था । रास्ते में उसे एक बाँसुरी पड़ी मिली । उसे देख कमल बहुत ही खुश हुआ और उसी दिन से उसने मुरली की साधना शुरू की । वह दिन-रात मुरली बजाने लगा ।

"तब तो तुम्हें संगीत की साधना क्रमबद्ध रीति से करनी चाहिये । तुम किसी अच्छे गुरु के पास जाकर संगीत की खूबियों का परिचय प्राप्त कर लो ।" युवक के माँ-बाप ने उसे सुझाया ।

यह सुझाव तो कमल को बहुत पसन्द आया । मगर उसके गाँव में संगीत का ठीक ठीक अभ्यास करानेवाला कोई गुरु नहीं था । चपल नाम का एक व्यक्ति कुछ दिन शहर में रहकर संगीत का अभ्यास करके लौट आया था । इसलिये कमल ने उसी के पास जाकर सलाह माँगी ।

चपल कुत्सित बुद्धि का आदमी था । कमल की बातें सुनकर बड़ी ही प्रसन्नता से वह बोला, "मैं जो कुछ संगीत-विद्या जानता हूँ, उसे दूसरों को सिखाने की मेरी उत्कट अभिलाषा है । तुम से बढ़ कर कोई उत्तम शिष्य मुझे यहाँ दिखाई नहीं देता । पहले मेरे पास संगीत का कुछ अभ्यास करो और बाद में आगे की पढ़ाई के लिये शहर में जाकर श्रेष्ठ गायकों का शिष्य बनो । लेकिन पहले मैं जानना चाहता हूँ कि इस विद्या में तुम्हारा कहाँ तक प्रवेश है । मेरे समक्ष अपनी विद्या का कुछ प्रदर्शन करो ।"

बंसी-वादन कमल अच्छी तरह जानता था, इसलिये उसने चपल को बंसी बजाकर सुनायी ।

कमल का वेणु-वादन सुनकर चपल दंग रह

गया । उसने कुछ एक गुरुओं के आश्रय में रह कर संगीत का अभ्यास किया था फिर भी उस में कमल जितना प्राविण्य नहीं था । कमल की कला देख़ कर वह ईर्ष्या से भर उठा और बोला, "उफ़ ! तुम्हारे संगीत में सर्वत्र अपस्वर ही सुनाई दे रहे हैं । तुम संगीत-विद्या पाने की अर्हता बिलकुल नहीं रखते । इधर-उधर कुछ लोक-गीत गाकर समय काटना ही तुम्हारे लिये ठीक होगा । "

यह सुनकर कमल बेचारा एकदम हताश हो गया । उसे अपने आप पर क्रोध भी आया, कि उसने अपना अत्यन्त अमूल्य समय व्यर्थ ही गँवाया है । वह सीधे घर पहुँचा और अपनी बंसी माँ के हाथ देकर बोला, "माँ, इसे चूल्हे में जला दो । अब मैं ज़िंदगी भर संगीत का नाम भी नहीं लूँगा । "

माँ ने कमल से सारा वृत्तान्त जान लिया और उसे समझाया, "चपल की बातों में आकर तुम अपनी संगीत-साधना से मुँह मोड़ना चाहते हो ? क्या तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है ? तुम्हारा संगीत सुनकर ईर्ष्या से ही चपल ने तुम्हारी अवहेलना की है । "

"माँ, सब को मालूम होना चाहिये कि चपल की ईर्ष्या के कारण ही मैं ने संगीत-सन्यास स्वीकारा है । तब सब लोग उसकी निन्दा करेंगे । कुछ भी हो । अब मैं ने संगीत त्याग दिया, सो त्याग दिया ! "

दूर बैठे कमल के पिता ने ये बातें सुनीं और अपने पुत्र के पास आकर कहा, "बेटे, जैसी तुम्हारी इच्छा ! संगीत के प्रति तुम्हें जो प्यार है, उससे अधिक अंश में तुम्हारे मन में चपल के प्रति द्वेष-भाव हो, तो तुम्हारा संगीत को तिलांजलि देना न्याय-संगत ही है । इसलिये तुम जैसा उचित समझो, करो । "

पिता की बातें सुनने पर कमल को अपनी भूल मालूम हुई । उसने चपल के प्रति द्वेष-भाव त्याग दिया और शहर जाकर योग्य गुरु के आश्रय में गया । बड़ी लगन से उसने संगीत का अध्ययन किया और विशेष कर वेणु-वादन में वह बेजोड़ सिद्ध हुआ ।

पाँच प्रश्न

[५]
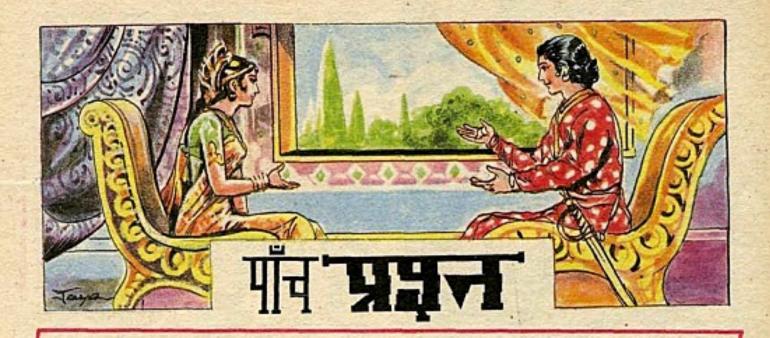
अगले दिन धीरसिंह सुलोचना के सामने ठीक समय पर उपस्थित हुआ । सुलोचना ने उससे कहा, "यहाँ से ईशान्य दिशा में एक पर्वत है । उसका नाम है शब्दभेदी । उस पर्वत की विशेषताएँ क्या हैं और पर्वत के उस पार के राज्य का नाम क्या है ? यही है मेरा पाँचवा प्रश्न । "

सुलोचना से तीन महीनों के अवधि लेकर धीरसिंह अपने घोड़े पर सवार होकर ईशान्य दिशा में निकल पड़ा । मार्ग-मध्य में अनेक गाँव तथा शहरों को पार कर के सात दिन की यात्रा के बाद वह एक महारण्य में जा पहुँचा । धूप कड़ी थी इसलिये ज़रासा विश्राम करने के ख़याल से वह घोड़े पर से उतरा और उसे एक पेड़ से बाँध कर खुद एक पेड़ की छाया में बैठ गया । अचानक उसे पक्षियों की कलरव सुनाई दी और उसी के साथ विभिन्न प्रकार के जानवरों का गर्जन और चिल्लाहट भी शुरू हुई । सारा जंगल उन आवाज़ों से गूँज उठा । धीरे धीरे वह ध्वनि उसके समीप आने लगी । धीरसिंह झट उसी पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ से उस ध्वनि की दिशा में देखने लगा । वहाँ का दृश्य देखकर वह दंग रह गया ।

हिरण, हाथी, शेर, बाघ, सियार आदि जानवर चिल्लाते-चिंघाड़ते आगे आगे दौड़ रहे थे और चार पैर, लंबी पूँछ और अंगार बरसती आँखोंवाला एक विचित्रसा जानवर उनका पीछा कर रहा था । इस जानवर के चंगुल से बचने
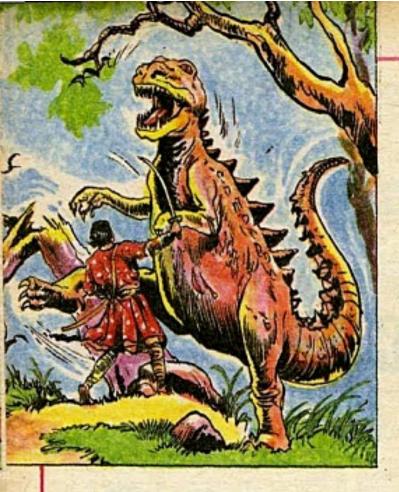
के लिये ही ये सारे जंगली जानवर घबराकर भाग रहे थे ।

थोड़ी ही देर में वे सारे जानवर धीरसिंह के बैठे हुये पेड़ को पार कर निकल गये । उसी कोलाहल में धीरसिंह का घोड़ा भी कहीं भाग गया । उस विचित्र जानवर ने वहाँ पहुँच कर पेड़ के ऊपर की ओर देखा और धीरसिंह को वहाँ पाकर वह ज़ोर से उसकी ओर उछल पड़ा । धीरसिंह ने तत्काल उस जानवर का सिर काटने के इरादे से अपनी तलवार का भरपूर ताक़त से वार किया । मगर सिर कटा नहीं और उस प्रहार के कारण जानवर मात्र उछलकर दूर जा गिरा । धीरसिंह पेड़ से नीचे कूद पड़ा । उसने जानवर के साथ भयंकर युद्ध किया और अन्त में अपनी तलवार से उसने उस जानवर का पेट चीर डाला । भयानक गर्जन के साथ वह दम तोड़ बैठा ।

वास्तव में जब धीरसिंह ने दूर से उस जानवर को आते देखा था, तब उसकी आकृति देखकर वह मन-ही-मन बहुत घबराया था । अब उस जानवर को अपने सामने मरा देखकर उसकी जान में जान आ गई । उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसे खूँखार जानवर को वह कैसे मार सका । उसके चारों तरफ घूमकर उसने बारीकी से उसे देखा । उसके लंबे-लंबे नाखून और दाढ़ देखकर उसे लगा - उन्हें काटकर अपने पास क्यों न रख लें ? जब अवसर आएगा तो अपने पराक्रम की गाथा सुनाते सुनाते लोगों को इनके भी दर्शन करा दें ।

धीरसिंह ने उस जानवर के नाखून और दाढ़ काटकर सुरक्षित अपने पास रख लिये और वह आगे बढ़ा । दूसरे दिन शाम को वह एक नगर में पहुँचा । सारे नगर में ऊँचे ऊँचे भवन तथा विशाल, मनमोहक उद्यान थे । मगर कहीं भी मानवों का संचार उसे दिखाई नहीं दिया । थोड़ी ही देर में वह राजमहल के पास पहुँचा । तभी एक सिपाही ने आगे बढ़कर उसका स्वागत करते हुए कहा, "महानुभाव, आप को हमारे महाराज बुला रहे हैं । "

धीरसिंह ने राजमहल में प्रवेश किया । राजा चिन्तित वदन लिये बैठा हुआ था । धीरसिंह को देखते ही उस राजा ने कहा, "तुम तो कोई परदेशी से लगते हो । मेरा नगर धनदौलत के लिये अत्यन्त विख्यात है । फिर भी मेरी प्रजा सुख-शान्ति से कोसों दूर है । यहाँ के

समीप के जंगल में एक विचित्र सा जानवर निवास करता है । जब तब वह हमारे नगर में घुसकर मनुष्यों को खा जाता है । उस का संहार करना किसी के बस की बात नहीं है । इसीसे हैरान होकर सारी जनता कहीं चली गयी है और मेरा सुन्दर नगर मरुभूमि जैसा बन गया है । तुम ने देखी ही होगी नगर की हालत । ''

धीरसिंह झट समझ गया कि जिस जानवर का वह खातमा कर चुका है, राजा उसी के बारे में कुछ कह रहा है । अब राजा के दुख को दूर करना धीरसिंह के बाएँ हाथ का खेल था । उस जानवर के नाखून और दाढ़ तो उसके पास थे ही । धीरसिंह ने सोचा - अब अच्छा मौक़ा हाथ आया है ।

"जी हाँ ! मैंने सब देखा है । मगर आप जिस विचित्र जानवर की बात कर रहे हैं, उसे तो कल दोपहर को ही मैंने मार डाला है । '' यह कहते हुए उस जानवर के नाखून और दाढ़ धीरसिंह ने राजा को दिखाये ।

उन चीज़ों को देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्नता से बोला, "तुम ने मेरी प्रजा के प्राणों की रक्षा की है । बहुत लम्बे समय के बाद मैं अब चिन्तामुक्त हो पाया हूँ । अब इसी वक्त ढिंढ़ोरा पिटवाकर मैं अपनी प्रजा को वापस बुलवा लेता हूँ । तुम्हारा यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूँगा । बताओ, तुम्हारा इस तरफ़ कैसे आना हुआ ? मैं अगर तुम्हारे किसी काम आ सकूँ, तो मुझे बड़ा संतोष रहेगा । मैं अवश्य तुम्हारी आवश्यकता की पूर्ति करूँगा । ''
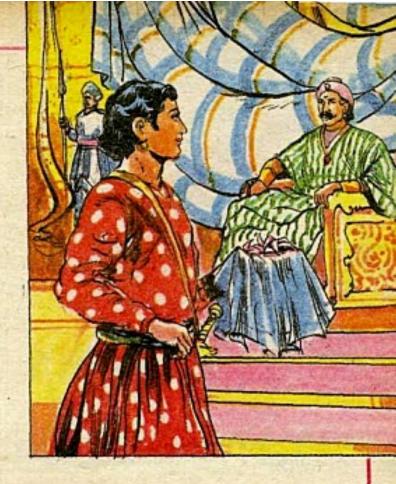
"मैं शब्दभेदी पर्वत के रहस्यों का पता कराने आया हूँ । वहाँ तक पहुँचने का रास्ता अगर आप मुझे बता सकते हैं तो मैं आप का आभारी रहूँगा । '' धीरसिंह ने कहा ।

"वह पर्वत यहाँ से दस कोस की दूरी पर है । उससे सटकर शब्दभेदी नगर बसा हुआ है । फिर भी तुम पहले तीन दिन तक यहाँ रहकर हमारा आतिथ्य ग्रहण करो और बाद में शब्दभेदी पर्वत की ओर चल पड़ना । ''राजा ने अनुरोध किया ।

धीरसिंह ने राजा के साथ तीन दिन बिताये और दो राजभटों को साथ लेकर चौथे दिन वह शब्दभेदी नगर पहुँचा । नगर की उत्तरी दिशा में एक ऊँचा पर्वत था । वृक्षों व पौधों से भरा वह पर्वत इस प्रकार हराभरा लग रहा था,

किया, मगर शीघ्र ही बड़े वेग से वह दूर निकल गया ।

विस्मय में आकर धीरसिंह ने पूछा, "वीरवर्मा, यह पुकार कैसी ? वह युवक क्यों इस प्रकार भागा जा रहा है ? उस को रोकने का प्रयत्न किसी ने क्यों नहीं किया ?"

"यह पुकार शब्दभेदी पर्वत से निकलती है । जिसको लक्ष्य करके वह पुकार निकलती है, वह व्यक्ति अपना अस्तित्व भूलकर अपने आप पर्वत की ओर भाग खड़ा होता है । इस प्रकार आजतक जितने लोग गये हैं, उन में से एक भी कभी लौटकर नहीं आया । उन के बारे में दुखी होने से कोई प्रयोजन नहीं है । इसलिये इस संबन्ध में कोई ध्यान भी नहीं देता । '' वीरवर्मा ने समझाया ।
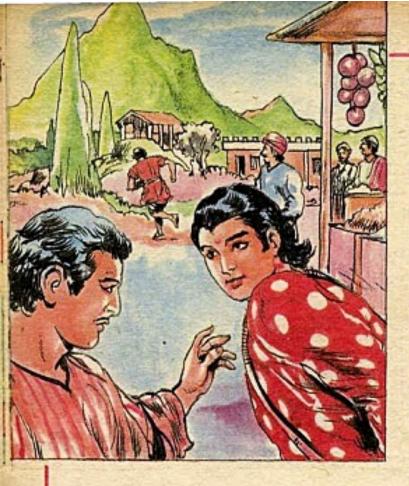
कि मानो उसपर सर्वत्र हरी दूब बिछी हो । उस पर्वत के बारे में ज़्यादा जानकारी पाने के लिये धीरसिंह ने एक सराय में पनाह ली । वहाँ कई लोगों के साथ उसका परिचय हुआ । उसके उत्तम व्यवहार के कारण कुछ लोग उसके अच्छे मित्र भी बने । खासकर वीरवर्मा नामक युवक की धीरसिंह से बहुत ही गाढ़ी मित्रता स्थापित हुई ।

एक दिन धीरसिंह वीरवर्मा के साथ नगर के मार्ग पर टहल रहा था, तब अचानक मेघगर्जन की भाँति उन्हें यह पुकार सुनाई दी, "आओ, शीघ्र आ जाओ । '' एक दूकान में बैठा हुआ एक युवक तत्काल उठ खड़ा हुआ और पागल की भाँति उस पर्वत की दिशा में भागने लगा । धीरसिंह ने उसको पकड़ने का प्रयास

"यह पुकार क्यों आती है ?" धीरसिंह ने पूछा ।

"वह रहस्य तो आज तक कोई भी नहीं जान पाया है । '' वीरवर्मा ने उत्तर में कहा ।

"इस प्रकार भागनेवाले के पीछे जाने से रहस्य का पता लगाया जा सकता है न ?" धीरसिंह ने पूछा ।

"मगर ऐसा साहस भी तो आजतक किसीने नहीं किया । '' वीरवर्मा बोल उठा ।

इसपर धीरसिंह मौन हुआ मगर वह कुछ सोचता ही रहा । फिर वे दोनों सराय में पहुँच गये ।

एक हफ़्ते बाद एक दिन शाम को धीरसिंह और वीरवर्मा जब तक उद्यान में बैठे थे तब फिर मेघगर्जन जैसी ध्वनि उस प्रदेश में गूँज

उठी, "आओ, शीघ्र आ जाओ ।"

और क्या आश्चर्य ! धीरसिंह के सामने बैठा हुआ वीरवर्मा ही अचानक उठकर पर्वत की ओर खिंचा सा चलने लगा । धीरसिंह यह कहते उसका पीछा करने लगा कि, "वीरवर्मा, रुक जाओ । रुक भी जाओ वीरवर्मा ।" पर धीरसिंह की पुकार पर बिलकुल ध्यान न देकर वीरवर्मा अब भागने लगा । उसको पकड़ने के लिये धीरसिंह भी दौड़ पड़ा । वीरवर्मा अब पहले से भी कहीं अधिक तेज़ी से भागने लगा । मगर बड़ी दृढतापूर्वक धीरसिंह उसका पीछा करता रहा । थोड़ी ही देर में दोनों उस पर्वत पर चढ़ने लगे । रास्ते में एक भारी चट्टान उनका अवरोध बनकर खड़ी थी । मगर वीरवर्मा बड़ी आसानी से उसको भी लाँघ गया । धीरसिंह ने भी छलाँग लगाकर उसे पार किया । इसके बाद दोनों हरी दूब से भरे मैदान में दौड़ने लगे । हठात् भयंकर ध्वनि के साथ सामने की ज़मीन दुभंग हो गयी और आगे दौड़ता हुआ वीरवर्मा उस खाई में गिर गया । तुरन्त वह दरार मिटकर पृथ्वी फिर समतल हो गयी ।

धीरसिंह ठिठक कर यह सब देखता ही रहा । उदास हो उसने चारों तरफ नज़र दौड़ायी और सामने दिखाई देनेवाले पर्वतशिखर की ओर वह चल पड़ा । थोड़ी दूर जाते ही अचानक उसके इर्दगिर्द असहनीय गर्मी फैल गयी । और ज़रा आगे बढ़ने पर उसे एक अग्नि-नदी दिखाई दी । अग्नि-नदी की तरंगें ज्वालाओं के रूप में आकाश को छू रहीं थीं । धीरसिंह यह सोचता हुआ वहाँ की एक चट्टान पर बैठ गया, कि अब इस अग्नि-नदी को पार कैसे करें । इतने में सूर्यास्त हो गया । उस भयानक वातावरण में आधी रात तक बैठने पर धीरसिंह बैठे-बैठे ही उस चट्टान से सट कर सो गया ।
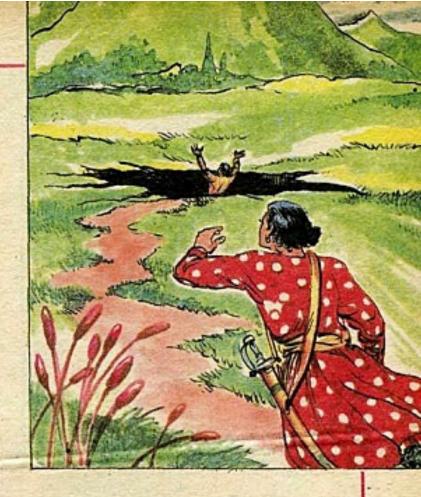
सपने में उसने मानवी सिर और सिंह के धड़ वाली एक आकृति देखी । वह प्राणी बोला, "धीरसिंह, तुम्हारा साहस व पराक्रम अपूर्व है । इस अग्नि-नदी के उस पार अग्निनाभ नामक राक्षस एक रत्न-पर्वत का पहरा दे रहा है । नदी में तुम्हें एक नाव दिखाई देगी । साहस करके तुम उस नाव पर सवार हो जाओ और सूर्योदय के पूर्व ही उस राक्षस का संहार करो । अपने कार्य में तुम

ज़रूर सफल रहोगे । '' इतना कहकर उस प्राणी ने उसे आशिर्वाद दिया ।

धीरसिंह ने आँखें खोली । पूर्व दिशा में लाली छा रही थी। अग्नि-नदी में एक नाव उसे दिखाई दी । धीरसिंह तट पर से सीधे उस नाव में कूद पड़ा । नाव दूसरे तट पर पहुँची । इतने में एक भयानक आकृतिवाला राक्षस गरज उठा - "मेरी अनुमति लिये बगैर मेरी भूमि पर कदम रखनेवाला दुःसाहसी मानव कौन है ?" और हुँकार भरता हुआ वह धीरसिंह के पास आ पहुँचा । धीरसिंह ने झटके से अपनी तलवार से राक्षस का सिर काट डाला । दूसरे ही क्षण वह राक्षस एक दिव्य-पुरुष के रूप में परिवर्तित हो गया । उसने कहा, "मैंने अपने मित्र के प्रति द्रोह किया था और परिणाम-स्वरूप मुझे इस प्रकार राक्षस-जीवन बिताना पड़ा । तुम्हारे कारण मैं उस शाप से मुक्त हो पाया । मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ । '' इतना कहकर धीरसिंह को प्रणाम करके वह दिव्य-पुरुष आकाश-मार्ग से उड़ गया ।

धीरसिंह प्रसन्नता-पूर्वक आगे बढ़ा । चारों तरफ़ का प्रदेश चाँदी जैसे प्रकाश से झिलमिला रहा था । वहाँ के सरोवर का जल रजत जैसा दमक रहा था । धीरसिंह प्यासा था, इसलिये उसने झुककर अपनी अंजली में पानी भर लिया । उसके हाथों को जहाँ तक पानी का स्पर्श हुआ था वहाँ तक उसके दोनों हाथ चाँदी के हो गये । इससे विस्मित हो पानी छोड़कर धीरसिंह वहाँ से आगे बढ़ा । वहाँ उसे एक सुवर्ण-तड़ाग दिखाई दिया । सारा तड़ाग खिले सुवर्ण-कमलों से भरा हुआ था । वहाँ भी एक नाव थी । उस नाव की मदद से उस तड़ाग को पार कर वह एक पहाड़ी शिखर पर पहुँचा । वहाँ पर सर्वत्र हीरे, माणिक आदि रत्नों के ढेर लगे हुए थे । इससे वह पर्वत इन्द्रधनुष जैसे विविध रंग बिखेर रहा था । उसी वक्त आकाशवाणी सुनाई दी, "इस में से केवल छः रत्न मात्र उठा लो । '' धीरसिंह छः रत्न लेकर आगे बढ़ा ।

थोड़ी ही दूर पर धीरसिंह को निर्मल जल धारा वाली एक नदी दिखाई दी । नदी में उतर कर उसने अपने हाथ-पैर धो लिये । हाथों को धोते को ही वे अपने पूर्व रूप में परिवर्तित हो गये । लेकिन उसके नाखून

चांदी के ही रह गये । इतने में नदी में एक नाव बहती हुई आयी । उसमें सवार होकर धीरसिंह दूसरे तट पर पहुँचा । वहाँ के जंगल को पार कर वह किसी गाँव में पहुँचा ।

उसके सामने से एक ग्रामवासी आ निकला । धीरसिंह को देख उसने उसे भक्तिपूर्वक प्रणाम किया ।

"सुनो, मुझे देखकर तुम साहस क्यों कर रहे हो ? यह गाँव किस राज्य का है ?" धीरसिंह ने ग्रामवासी से पूछ लिया ।

"आप तो साक्षात् हमारे युवराज जैसे लग रहे हैं । यह हमारे नेपाल राज्य का सीमावर्ती गाँव है । " ग्रामवासी से कहा ।

यह सुन परमानन्दित हो धीरसिंह वहाँ से निकलकर कौशाम्बी पहुँचा और सीधे सुलोचना से मिलने गया । उस वक्त कौशाम्बी राज्य का दरबारी पंडित सुधाकराचार्य भी वहाँ मौजूद था । धीरसिंह को देख मुस्कुराकर उसने उसका स्वागत किया । शब्दभेदी पर्वत पर जो जो विचित्र दृश्य देखे थे, उनका पूरा वर्णन और उसकी विशेषताएँ धीरसिंह ने सुलोचना को बतायीं और वहाँ से लाये अपूर्व रत्न और चांदी में परिवर्तित अपने नाखून भी उन दोनों को दिखाये ।

सारा वृत्तान्त सुनकर सुधाकराचार्य बोल उठे, "धीरसिंह, पृथ्वी पर ऐसी कोई बात नहीं रही, जिसपर तुमने विजय प्राप्त नहीं की हो । तुम्हारे साहस व पराक्रम केवल अपूर्व हैं । तुम्हारी परोपकार बुद्धि मानवजाति के लिये गर्व का कारण है । " इतना कहकर सुलोचना की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "सुलोचना, तुमने जो पाँच प्रश्न पूछे थे, उन सब के उत्तर धीरसिंह ले आया है । तुम जिस प्रकार के धीरोदात्त लक्षणोंवाले राजकुमार के साथ विवाह करना चाहती थी, उन सारे लक्षणों से पूर्ण इस नेपाल के राजकुमार के साथ विवाह करने के लिये अब तुम तैयार हो न ?"

सुलोचना ने सुहास्यपूर्वक अपनी स्वीकृति ज़ाहिर की । इस के बाद एक शुभ मुहूर्त पर सुलोचना और धीरसिंह का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ । इसके बाद धीरसिंह ने अनेक साल तक न्यायपूर्वक राज्य किया । (समाप्त)

उपहार
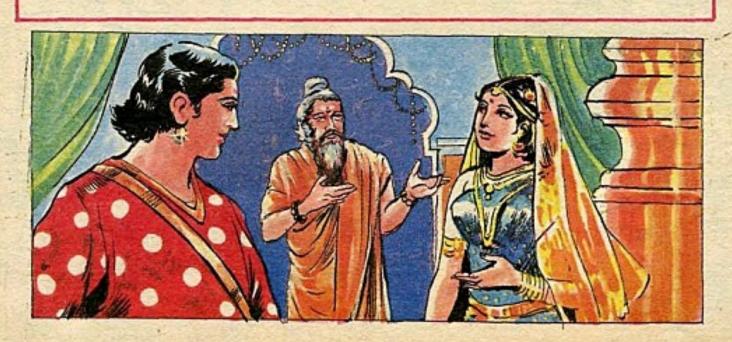
दृढव्रती विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आये । शव को पेड़ पर से उतारा और उसे कंधे पर लादकर हमेशा की तरह मौन हो श्मशान की ओर चलने लगे । तब शव में वास करनेवाले बेताल ने कहा - "राजन्, इस अर्ध रात्रि के समय आपको राजमहल के शयनागार में आराम की नींद लेनी चाहिए । और आप इस भयानक श्मशान में तरह तरह के कष्ट झेल रहे हैं । आपकी इस हालत पर मुझे दया आती है । आप स्वयं महान् पराक्रमी हैं और कई विद्याओं का आपने गहरा अध्ययन भी किया है । ऐसा होते हुए कभी आपमें थोड़ा अहंकार पैदा हुआ तो उसको दोष नहीं कहा जा सकता । आपको इस कार्य में प्रवृत्त करनेवाले अगर हीन-प्रकृति लोग हों, तो वे तिल का ताड़ बनाकर आपके अहंकार की अवहेलना कर सकते हैं । इसके उदाहरण-स्वरूप एक गाँव के मुखिये की कहानी मैं आपको सुनाता हूँ । ग़ौर से सुनिए, इससे

बेताल कथा
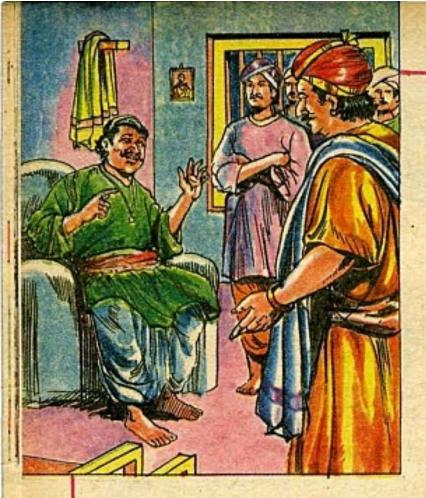
आप अपने परिश्रमों को भी भूल जाएँगे ।

बेताल ने कहानी सुनाना शुरू किया –

एक गाँव था सीतापुर । वहाँ के अधिपति का नाम था भूषण वर्मा । वह अनेक विद्याओं और कलाओं की जानकारी रखता था । राज-काज के लिए वह अनेक गाँवों में आता-जाता था । वह हमेशा कहा करता कि वह जहाँ भी जाता है, लोग उसका खूब आदर व आतिथ्य करते हैं । गाँव के सभी लोग उसके भाग्य को खूब सराहते थे ।

एक बार भूषण को किसी काम के लिए विद्यानगर जाना पड़ा । विद्यानगर सीतापुर से काफी दूर था । वहाँ तक पहुँचने का मार्ग भी ऊबड़-खाबड़ और कँटीला था । पर लोग कहते थे कि विद्यानगर एक आदर्श ग्राम है । वहाँ के नागरिक बड़े आतिथ्यशील हैं और अभ्यागतों की खूब अच्छी सेवा करते हैं ।

एक बार सीतापुर के चार बुजुर्गों ने विद्यानगर के दर्शन करने की सोची । वे सभी एक साथ भूषण वर्मा के पास गये और उनसे प्रार्थना की – "वर्माजी, सुना कि आप किसी कार्य के लिए विद्यानगर जा रहे हैं । बहुत दिनों से हमारे मन में भी उस नगर के दर्शन की इच्छा है । क्या ही अच्छा हो आप हमें भी अपने साथ ले चलें । वहाँ आपका जो आदर-सत्कार होगा, उसे हम देख सकेंगे । विद्यानगर के वासी आपके साथ हमारा भी स्वागत करेंगे । आप कृपया हमारा प्रस्ताव स्वीकार कीजिए, ना मत कहिए । "

भूषण वर्मा ने थोड़ी देर सोचा, फिर निवेदन किया – "भाइयों, आदर-सत्कार तो ओहदा और योग्यता के अनुसार होता है । विद्या-नगर के लोग मेरा आतिथ्य जिस प्रकार करेंगे, वैसा शायद आपका न भी करें । फिर आप लोगों को अफ़सोस होगा । इस बात का पूरा विचार आप लोग करें । आप लोगों को अपने साथ ले जाने में मुझे वैसे कोई आपत्ति नहीं है । सोचकर चलिए । "

भूषण की शर्त सब लोगों ने मान ली । फिर भूषण ने सब लोगों के लिए एक खास वाहन का प्रबंध किया । अतः सीतापुर से विद्यानगर की यात्रा एक ही दिन में पूर्ण हो सकी । यात्रा में गपशप के दौरान में भूषण वर्मा ने अपने गाँव के इन बुजुर्गों को

फिर फिर समझाकर कहा – "देखिए, जो आतिथ्य मेरा होगा, वही आप लोगों का न हुआ तो बुरा मत मानना ।"

विद्यानगर में प्रवेश करते ही राज-प्रतिनिधि का एक सेवक भूषण वर्मा से मिला । भूषण के साथ चार और व्यक्तियों को देखकर उसने चिन्ता प्रकट की – "ओह, आप लोग तो पाँच आदमी हैं । निवास का उत्तम प्रबंध तो एक ही का किया जा सकता है । अब क्या करें ?"

भूषण ने झट उसकी चिन्ता दूर की – "देखो, ये चारों मेरे मित्र हैं सही । पर इनके निवास की व्यवस्था किसी और निवास-गृह में की जाए तो ये बुरा नहीं मानेंगे । तुम नाज़ुक संकट में मत पड़ो ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है साहब ? आपके मित्रों की यों असुविधा नहीं होने देंगे हम ।" कहकर सेवक ने तुरन्त राजभवन में सब का एक साथ रहने का बढ़िया प्रबंध करवाया । यह देखकर सीतापुर के चारों बुज़ुर्ग दंग रह गये । उन्होंने भूषण वर्मा की खूब तारीफ़ की ।

हीरे-जवाहरातों के लिए विद्यानगर प्रसिद्ध था । भूषण वर्मा ने एक जौहरी की दूकान से अपने लिए दो हीरे खरीद लिये । पर राज-प्रतिनिधि ने ऐसा नहीं होने दिया । उसने वे हीरे गाँव के अधिकारी को उपहार-स्वरूप दिये और उसके मित्रों में से प्रत्येक को भी दो-दो हीरे दिलवाये । सब बुज़ुर्ग बहुत प्रसन्न हुए ।

राज-प्रतिनिधि को जब मालूम हुआ कि भूषण वर्मा ललित कलाओं में विशेष रुचि रखता है, तो उसने ख़ास संगीत-सभा, कवि-संमेलन तथा नृत्य-दर्शन के कार्यक्रम आयोजित किये । इन सभी समारोहों में भूषण वर्मा के साथ गाँव के बुज़ुर्गों ने भी हिस्सा लिया । उन्होंने उन सभाओं में यथोचित भाषण देकर विद्यानगरी के वासियों को धन्यवाद दिये ।
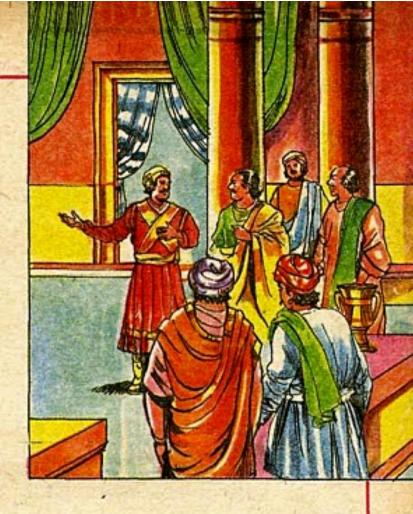
राज-प्रतिनिधि ने भूषण वर्मा की प्रशंसा करते हुए अपने भाषण में कहा – "आपके गाँव के केवल अधिकारी ही नहीं, अन्य ग्रामवासियों को कला में अभिरुचि है यह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई ।

अंतिम दिन सब लोग विद्यानगर के मशहूर महेश्वर के मंदिर में देव-दर्शन के लिए गये । उस दिन राज-प्रतिनिधि किसी अन्य काम में व्यस्त था, इन लिए इस लोगों के साथ न जा
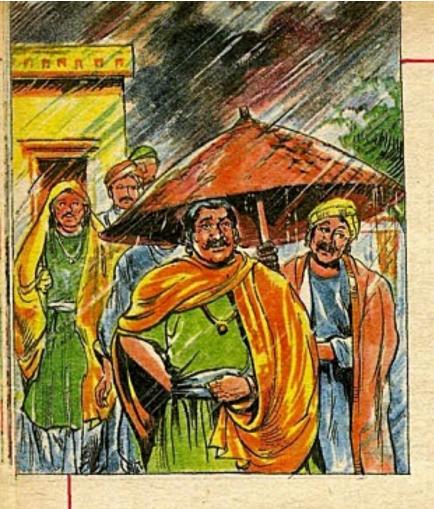
सका । भगवान के दर्शन करके जैसे ही ये लोग बाहर आ गये, अचानक मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई ।

राज-प्रतिनिधि का सेवक रंगदास मंदिर के प्राकार में से किसी से माँगकर एक छाता ले आया और उसे खोलकर भूषण वर्मा के सर पर धर दिया । भूषण वर्षा में भीगने से बच गये । सीतापुर के बाकी चार बुजुर्ग बरसात में बुरी तरह भीग गये ।

भूषण वर्मा का विद्यानगर का काम समाप्त हुआ । जब ये सब जाने निकले तो राज्य के अधिकारी ने भूषण वर्मा को तथा उसके सभी मित्रों को विविध प्रकार के उपहार दिये । सभी ने धन्यवाद देते हुए उन्हें स्वीकार किया ।

विद्यानगर छोड़ने के पूर्व सीतापुर के बुजुर्गों तो भूषण वर्मा से पूछा - "भूषणजी, आते समय हम लोग अपने साथ कुछ चीज़ें ले आये हैं, यह सोचकर कि समय आने पर उन्हें सुयोग्य व्यक्ति को भेंट-स्वरूप दे सकें । यहाँ हम को कुछ लोगों ने हीरे दिये, कुछ ने कालीन और गलीचे दिये । बढ़िया दावतें तो कइयों ने दीं । अब हमारी समझ में नहीं आ रहा है, कि हम किसको कौन चीज़ दें । आप इन सभी वस्तुओं को देखिये और मार्गदर्शन कीजिये कि राज-प्रतिनिधि से लेकर रंगदास तक किसको कौन चीज़ उपहार के रूप में दें । " कहते हुए बुजुर्गों ने अपनी लाईं सभी वस्तुएँ भूषण के सामने पेश की ।

भूषण वर्मा ने उन सभी चीज़ों की ओर कुछ तुच्छता भरी नज़र से देखते हुए कहा - "ग़लत मत समझना, ये सभी चीज़ें प्रतिष्ठित लोगों को देने लायक नहीं है । इन्हें राजप्रतिनिधि के सेवक रंगदास को दिया जा सकता हैं । " फिर रंगदास को बुलाया गया और वे सभी चीज़ें उसे उपहार-स्वरूप दे दी गईं ।

सभी लोग सीतापुर अपने घर लौट आये । चार बुजुर्गों में से छोटे व्यक्ति ने भूषण से कहा - "वर्माजी, हमारा अहोभाग्य था कि आपके साथ यात्रा करने का अवसर मिला । कभी मौक़ा मिला तो आपके साथ और एक बार आना चाहेंगे । "

भूषण इस पर कुछ कहने ही वाला था कि उन बुजुर्गों में से बड़े व्यक्ति ने छोटे को टोका - "देखो भाई, एक बार जो मौक़ा मिला उसीमें खुश रहो । जो लोग राज-काज पर जाते हैं,

वे हमेशा अपने मित्रों को ले जाएँ, यह उचित नहीं । मैं खुद वर्माजी के प्रति कृतज्ञ हूँ । लेकिन भविष्य में उन्हें यों कष्ट नहीं दूँगा । ''

यह कहानी सुनाकर बेताल ने राजा से कहा - ''राजन्, गाँव के बड़े बुजुर्ग ने छोटे को जो उपदेश दिया उससे मालूम होता है कि उसके मन में भूषण वर्मा के प्रति ईर्ष्या का भाव है । क्या ऐसी प्रवृत्ति ठीक मानी जा सकती है? इस तरह की ईर्ष्या का क्या कारण है भला ? ऐसी कुछ कृतघ्नताभरी बातें उसने क्यों कहीं ? मेरे इस संदेह का समाधान जानकर भी आप न देंगे तो आपका सिर फटकर उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे । ''

विक्रमादित्य ने बेताल का समाधान करते हुए कहा - ''गाँव का बड़ा बुजुर्ग बड़ा बुद्धिशाली मालूम होता है । बाकी तीनों भूषण वर्मा को ठीक ढंग से समझ न पाये । भूषण वर्मा को यह कदापि पसंद न था उसके साथ गाँव के बुजुर्ग भी उसके समान आदर-आतिथ्य प्राप्त करें । उनको अलग रखने के लिए आवास-व्यवस्था से लेकर वह बराबर प्रयत्नशील रहा । लेकिन चूँकि विद्यानगर के निवासी और राज-प्रतिनिधि अत्यन्त शिष्ट थे, उसकी यह कोशिश बेकार रही । विद्यानगर में गाँव के बुजुर्गों की अपेक्षा भूषण वर्मा के प्रति विशेष आदर-भाव केवल रंगदास ही ने दिखाया । बरसात के समय रंगदास ने छाता लाकर भूषण के सर पर धर दिया । अन्य बुजुर्गों से उसने यह भी नहीं कहा कि उनको छाता न दे सकने का उसे दुख है । इस लिए भूषण वर्मा को वही अधिक पसंद आया । जिन लोगों ने सभी मेहमानों का आतिथ्य किया उन्हें उपहार देना भूषण को पसंद नहीं था । इससे स्पष्ट हो जाता है कि भूषण वर्मा अहंकारी है और साधारण शिष्टाचार तक न जाननेवाला दम्भी भी है । ''

यह समाधान देकर राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर वृक्ष पर जा बैठा ।

(कल्पित)

दो सलाहकार
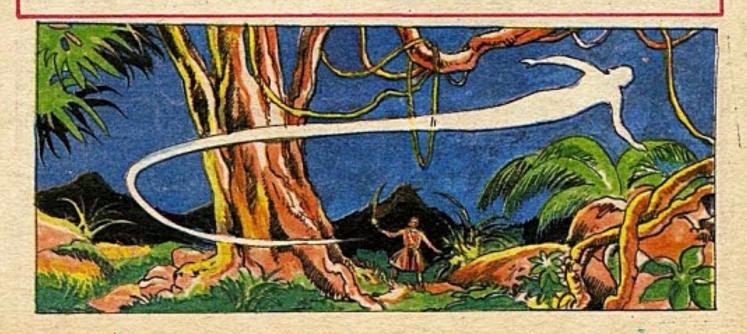
आनन्दपुर गाँव में दो भाई रहा करते थे - कृष्णदास और श्यामदास । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे । दोनों की गाँव के निवासी इज़्ज़त करते थे । किसी पर कोई आफत आन पड़े तो वे उसकी मदद करते और आवश्यकता पड़ने पर सब को नेक सलाह भी दिया करते । समय आने पर दोनों भाइयों में से जो घर पर होता, वहीं ये सारे काम कर देता ।

यों समय बीतते श्यामदास की समझ में एक बात आई, कि उसका बड़ा भाई कृष्णदास जो सलाह देता, उसे लोग आँख मूँदकर मान लेते और उस पर अमल करते हैं । पर वह जो सलाह देता, लोग कभी उस पर अमल करते, कभी नहीं । इस पर श्यामदास ने अच्छी तरह विचार किया कि ऐसा क्यों होता है ? पर कारण कुछ उसकी समझ में नहीं आया ।

अतः एक दिन श्यामदास ने अपने बड़े भाई से पूछा - "भैया, एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि आप गाँववालों को जो सलाह देते हैं, लोग उसके बारे में कुछ प्रतिवाद किये बगैर उस पर पूरी तरह अमल करते हैं । पर मेरी सलाहों के बारे में ऐसा नहीं होता । इसका कारण क्या है आप बताएँगे ?"

छोटे भाई का प्रश्न सुनकर कृष्णदास मुस्कुरा दिया । उसने श्यामदास से कहा - "इस संबंध में मैं खुद तुम को एक सलाह देना चाहता था, और उचित समय की प्रतीक्षा में था । अच्छा हुआ आज तुम्हीं ने यह प्रश्न उठाया । अब की बार जब मैं किसी को सलाह दूँगा, तब ज़रा ग़ौर से मेरे निर्णय को परख लो ।"

इन दोनों की बात चल रही थी, इतने में एक किसान चन्द्रनाथ वहाँ पहुँच गया । वह अपनी एक समस्या के संबंध में सलाह माँगने आया था । उसने पूछा - "कृष्णदासजी, इस

साल एक अच्छा मकान बनाने की सोच रहा हूँ । पर पत्नी का विचार है कि इस साल बेटी का विवाह पहले कर लें । दोनों कार्यों को संपन्न करने के लिए पर्याप्त धन मेरे पास नहीं है । समझ में नहीं आता कि पहले कौनसा काम कर दूँ । बड़ी उलझन में पड़ा हूँ कि क्या करूँ । कभी लगता है यह ठीक है, तो कभी लगता है वह ठीक है । इस लिए बस आपसे सलाह माँगने आया हूँ । ''

कृष्णदास ने पूछा - "यह तो बताओ कि तुम्हारी पुत्री की आयु क्या है ?"

चन्द्रदास ने जवाब में कहा - "पंद्रह साल अभी पूरे हुए हैं । ''

"क्या कोई अच्छा लड़का देख लिया है ?" कृष्णदास ने दूसरा सवाल पूछा ।

चन्द्रनाथ ने कहा - "जी नहीं, अभी तो रिश्ते की खोज करनी है । यह भी कोई आसान काम थोड़े ही है ?"

सब सुनकर कृष्णदास ने चन्द्रनाथ को समझाया - "देखो, अभी तुम्हारी लड़की शादी के लिए लायक नहीं हुई है । इस साल तो तुम मकान ही बनवा लो । बाद में बेटी की शादी के लिए पैसा जोड़ सकते हो । अगर पर्याप्त धन जमा न कर सके, तो अपने मकान को गिरवी रखकर कर्ज़ ले सकते हो । ''

कृष्णदास की सलाह चन्द्रनाथ को पसंद आई । उसी पर अमल करने का आश्वासन देकर चन्द्रनाथ घर चला गया ।

थोड़ी देर बाद एक और किसान नारायण वहाँ आ पहुँचा । विनय के साथ कृष्णदास को प्रणाम करके बोला - "कृष्णदासजी, मैं अपनी बेटी का सीमन्त संस्कार संपन्न करना चाहता हूँ । मामूली ढंग से नहीं, यों ठाठ से करना चाहता हूँ कि सब को याद रहे । पर कठिनाई यह है कि आज गाँठ में पर्याप्त धन नहीं है । सोचता हूँ कि अपने दोनों बैलों को बेच डालूँ । इसके लिए पत्नी भी हमराय है । आपकी क्या सलाह है, जानूँ ?"
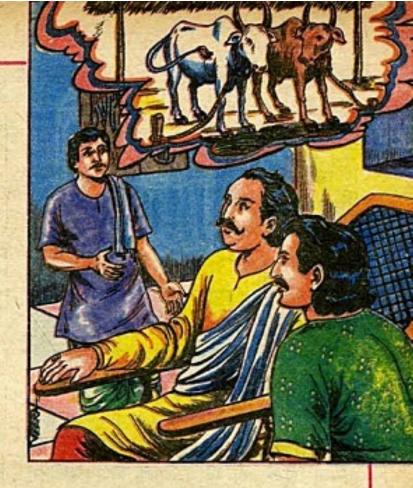
कृष्णदास ने सलाह दी - "नारायण, तुम्हारा सोचने का ढंग ठीक है । वैसा ही करो । '' नारायण मन-ही-मन संतुष्ट हो चला गया ।

अब श्यामदास ने कृष्णदास से कहा - "भाई साहब, आपने चन्द्रनाथ को जो सलाह दी वह सर्वथा उचित ही है । पर नारायण को जो सलाह दी, वह मुझे ठीक नहीं लगती । बेटी

का सीमन्त ठाठ से मनाने के लिए बैलों की जोड़ी बेचना ग़लती है । आपको क्या लगता है ?"

कृष्णदास ने मुस्कुराते हुए समझाया - "सुनो श्याम, हमारे पास सलाह माँगने के लिए दो प्रकार के व्यक्ति आया करते हैं । पहले वे व्यक्ति हैं जो किसी समस्या के पैदा होने पर खुद निर्णय नहीं कर सकते और हमारा मार्गदर्शन पाना चाहते हैं । इन लोगों को सलाह देने समय हमें पूरी सावधानी बरतनी चाहिए । दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो हमारे पास आने के पहले ही अपना निर्णय कर चुके होते हैं । अगर उनको सलाह दें कि उनका निर्णय उचित नहीं है, तो भी वे अपना निर्णय बदलेंगे नहीं । "

श्यामदास ने बीच ही में पूछा - "तो ये लोग हमारी सलाह माँगने आते ही क्यों भला ?"

कृष्णदास ने समझाया - "हम लोग गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं । अतः वे जो निर्णय लेते हैं, शिष्टाचार के रूप में हमारे कानों में डालते भर हैं । बस, इतनी ही बात है । चन्द्रनाथ को सचमुच हमारे सलाह की आवश्यकता थी । नारायण की बात ऐसी न थी । वह जो निर्णय ले चुका था, उसकी सूचना देते हुए नाम के लिए उसने सलाह माँगी थी ।

श्याम, जब आगे चलकर कोई तुम्हारे पास मार्गदर्शन के लिए आए, तो पहले यह ठीक समझ लो कि वह तुम्हारी सलाह पाकर इस पर अमल करने के विचार से आया है कि नहीं । तब उसे ठीक ठीक सलाह दो । दूसरे प्रकार का व्यक्ति आए तो उसकी बात सुन लो और उसके निर्णय को इत्मीनान से अपनी स्वीकृति दे दो । समझे ?"

थोड़ी देर के लिए श्यामदास सोचते हुए चुप रहा । फिर उसने कहा - "कृष्ण भैया, मैं अब समझ गया कि कुछ लोग मेरी सलाहों पर अमल क्यों नहीं करते ? कुछ भी हो, आपने अभी जो सलाह दी वही अच्छी सलाह है । "
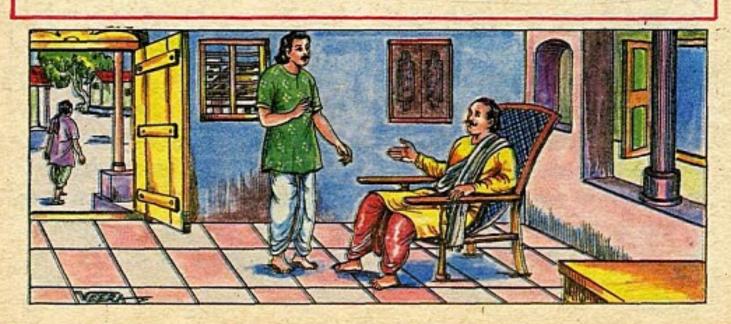
चन्दामामा पुरवणी - ६

ज्ञान का ख़ज़ाना

इस मास का ऐतिहासिक व्यक्तित्व

महाराणा प्रताप

राजपूताने का महान् वीर महाराणा प्रतापसिंह का जन्म १ मई १५४० को हुआ । उनके पिता थे मेवाड के उदयसिंह ।

जब प्रताप मेवाड़ के महाराणा हुए, तब अकबर अपने साम्राज्य को विस्तृत बना रहा था । उसको बड़ी चुनौती मिली राजपूत राजाओं की ओर से । राजनैतिक तंत्र और लड़ाई के द्वारा एक के बाद एक को अकबर ने जीत लिया । पर अकबर को सम्राट के रूप में न माननेवाले एक ही एक राजा थे - राणा प्रताप ।

१ अप्रैल १५७६ के दिन हल्दीघाटी में मानसिंग के नेतृत्व में अकबर की सेना और महाराणा प्रताप के बीच घमासान लड़ाई हुई । महाराणा असाधारण धैर्य के साथ लड़े और उनकी जीत होने ही वाली थी । पर इतने में मुग़लों की मदद के लिए और सेना आई । दुर्दैव से महाराणा का घोड़ा चेतक ज़ख्मी हुआ । ज़ख्मी चेतक अपने स्वामी को सुरक्षित स्थान पर ले गया ।

इस संस्मरणीय पराजय के बाद भी महाराणा नित्य प्रयत्नशील रहे । उन्होंने एक नया क़िला बनवाया और मुग़लों के जीते राज्य के एक एक भाग पर पुनः कब्ज़ा कर लिया । सन १५९७ में उनकी मौत हुई ।

भारत के महान् सुपुत्र के रूप में उनकी स्मृति कायम ज़िन्दा रहेगी ।

वह कौन ?

दक्षिण के एक मशहूर मंदिर को दिल्ली के सुलतान ने लूटा । सुलतान के लोग अनमोल संपत्ति के साथ उत्सवों में जुलूस के अवसर पर घुमाई जानेवाली भगवान की मूर्ति भी ले गये ।

इसके बाद एक महान् साधु अथक परिश्रम करके दिल्ली पहुँचा और उस मूर्ति को लौटाने के लिए उसने सुलतान को बाध्य किया । मूर्ति सुलतान की बेटी के कब्ज़े में थी, और उसने उसे साधु को दे दिया ।

साधु ने जब दक्षिण की ओर अपनी यात्रा शुरू की, तो उसने देखा एक पर्दानशीं औरत उसकी गाड़ी के पीछे आ रही है । कई दिन बीते, वह बराबर पीछे आती ही रही । अन्त में साधु को पता चला कि वह औरत और कोई नहीं बल्कि सुलतान की लड़की है । उसको उस मूर्ति से ऐसा प्यार हो गया था कि उसके बिना वह रह नहीं सकती थी । दयालु साधु ने उसे मंदिर के अंदर आने दिया । वहीं उसकी मृत्यु हुई । उसकी स्मृति में मंदिर में कुछ मुस्लिम रिवाज़ों का प्रचलन शुरू हुआ ।

वह साधु कौन ?

(पृष्ठ ८ देखिए)

पानी की धारा में वक्रता

सूचनाएँ :

नल से आनेवाले पानी के प्रवाह को यों समायोजित कीजिए कि एक पतली धारा सरल रेखा में बह चले । फिर हवा से भरा एक गुब्बारा सूखे ऊनी कपड़े पर घिसकर उस धारा से कुछ इंच दूरी पर धर दीजिए ।
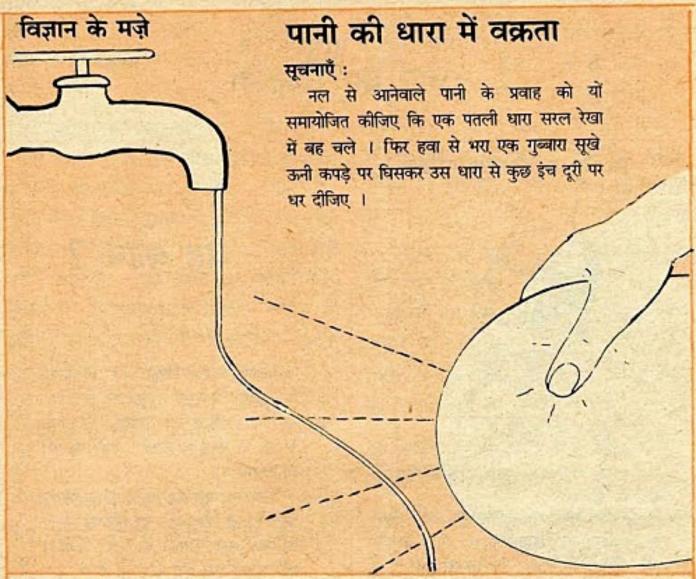
क्या होता है और क्यों ?

पानी की धारा एक जगह पर टेढ़ी नज़र आती है । देखते हो कि नहीं ? पानी की धारा सीधे न बहकर एक जगह बाहर खींच-सी जाती है और फिर नीचे बहती है ।

बहती पानी की धारा को एक तरफ खींचने के लिए बहुत कम बल की आवश्यकता है । गुब्बारे के पृष्ठभाग पर जो विद्युत् पैदा हुई है, वह पानी की धारा को अपने साधारण मार्ग से एक तरफ खींचती है । उस बिजली को स्थिर विद्युत् कहते हैं । गुब्बारे को सूखे ऊनी कपड़े पर घिसने से उसके पृष्ठभाग पर अनेक विद्युत-परिमाणु इकट्ठा होते हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप इस विद्युत् का निर्माण होता है । ये अतिरिक्त परमाणु धीरे धीरे हवा में मुक्त होते हैं, पर लगता है पानी जैसे पदार्थों की ओर वे अधिक आकर्षित होते हैं । और जैसे ही विद्युत्-परिमाणु मुक्त होते हैं, जिस वस्तु की तरफ उनका अधिक खिंचाव होता है, वहाँ थोड़ा आकर्षण पैदा हुआ नज़र आता है ।

अगर गुब्बारे को पानी की धारा के बहुत पास ले जाए तो पानी गुब्बारे से टकराकर उस पर से बहने लगेगा । बहता है कि नहीं? क्या यह भीगा गुब्बारा भी पानी को अपनी तरफ़ खींचता है ?

विद्युत्-भारित गुब्बारे से कागज़ के छोटे टुकड़े या हल्की-फुल्की धान की खीलें तुम उठा सकोगे ? खुद करके देखो तो सही !
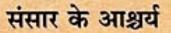
अलेक्झांड्रिया का दीप-गृह

अलेक्झांड्रिया शहर के पास, फेराँस टापू के मध्य में टालेमी फिलाडेफस का बनाया विशाल दीप-गृह था । यह ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी की बात है । यह सफ़ेद संगमरमर का बना था, उसमें कई माले थे और हर ऊपर का माला नीचेवाले से कुछ छोटा था । वह ५२० फुट ऊँचा था और उसकी चोटी पर अग्नि जलती रहती, जो ३० मील की दूरी से दिखाई देती । भूचाल के धक्के और समुद्र की लहरों ने धीरे धीरे उस दीप-गृह का विनाश किया, पर उसके अवशेष १३ वीं शताब्दी तक दिखाई देते थे ।

चिन्तक मर्त्य है, चि
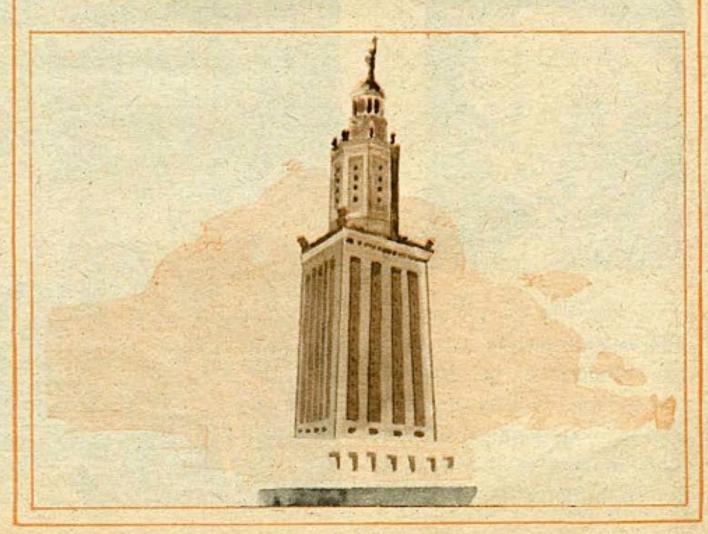
अतिप्राचीन काल से प्रगतिशील चिन्तक और रूढिप्रिय विचारकों का झगड़ा चलता आ रहा है । स्वतंत्र चिंतन और भाषण से ही मनुष्य की प्रगति हो सकती है । पुराने ख्याल रखनेवालों की समझ में यह आता नहीं ।

यही कारण है कि ई.पू. छठी शताब्दी में अथेन्स के छोटे नगर-राज्य के लकीर के फकीर अभिभावकों को एक दार्शनिक का बर्ताव पसंद नहीं आया । वह नवयुवकों को पढ़ाता था - 'खुद विचार करो और अंध-विश्वासों तथा पूर्वग्रहों से दूर रहो । ' जब कि युवकों के लिए दार्शनिक एक बुद्धिशाली

चिन्तन अमर !
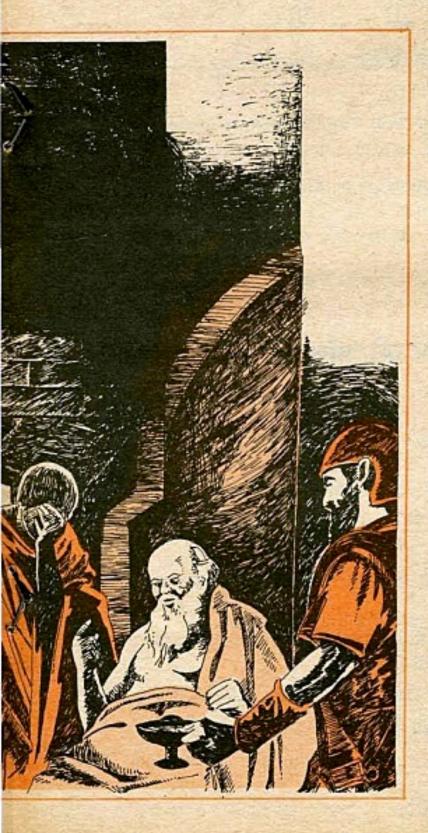
व्यक्ति था, रूढ़िप्रिय लोग उसे हठी और दुष्ट समझते थे । सर्वसाधारण में घोषित किया गया कि वह नवयुवकों को बिगाड़ रहा है । पाँच सौ एक न्यायपालकों की सभा ने उसको दोषी ठहराया । साक्रेटिस ने अपने विरुद्ध किए गए आरोपों का बड़ी होशियारी से विनोद के साथ खंडन किया । उसको मौत की सज़ा दी गई । हेमलॉक नाम के विष का प्राशन करके उसे मरना था ।

उसके शिष्य और प्रशंसकों ने उसे घेर लिया । सभी आँसू बहा रहे थे, पर सॉक्रिटिस हँस रहा था । अपने अनुयाइयों को दुख न करने का उपदेश उसने दिया । "मृत्यु या तो एक शून्य की अवस्था है अथवा आत्मा का इस दुनिया से और कहीं जाना है.... मेरे जाने की घड़ी आ गयी है । हम सब को अपने अपने रास्तों पर चलना है – मुझे मौत के, आपको जीवन के । केवल भगवान जानता है कि कौन अच्छा है । "

हँसते हुए, सब के प्रति सदिच्छाओं के साथ सॉक्रिटिस ने हेमलॉक की अंतिम बूँदें प्राशन की और सदा के लिए सो गया । इस तरह अथेन्स के नासमझ लोगों ने अपनी भूमि के सब से बुद्धिशाली आदमी को अपना जीवन समाप्त कराने में सफलता प्राप्त की ।

भारत के अतीत में झाँक कर देखें
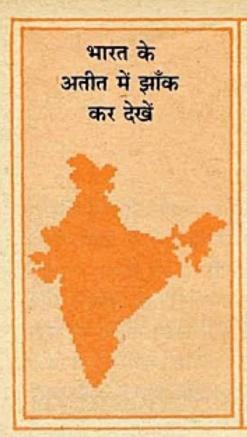
१. भारत के एक राज्य के प्रधान मंत्री ने अपने व्यक्तिगत संग्रह के आधार पर एक संग्रहालय बनाया जो आज अपने देश के राष्ट्रीय संग्रहालयों में से एक है । उसका नाम क्या है?

२. आक्रमणकारियों ने और शासकों ने जिसको छः बार विनष्ट किया वह भारत का मशहूर मंदिर कौनसा है?

३. इस मंदिर का स्थान क्यों पवित्र माना जाता है?

४. संसार की मशहूर कौन दो गुफाओं का शोध केवल एक सौ सत्तर वर्ष पूर्व लगाया गया?

५. एक राजकुमार पहले 'भयंकर' नाम से मशहूर था । बाद में लोग उसे 'धर्मात्मा' कहने लगे । वह कौन?

६. बुद्धधर्म को बढ़ावा देनेवाला युद्ध कौन-सा?

७. जिसे 'गेट-वे ऑफ इंडिया' कहते हैं, वह स्मारक कहाँ है?

८. वह कब बना और किस उद्देश्य से?

अपने सामान्य ज्ञान की जाँच करेंगे?

१. उत्तर ध्रुव दक्षिण ध्रुव से कितनी दूरी पर है?
२. पढ़ने के योग्य प्रकाश पाने के लिए कितने जुगनुओं की ज़रूरत होगी?
३. आपके ख्याल से सूर्य की चारों ओर कितने धूमकेतु घूमते होंगे?
४. चार आँखोंवाली मछली कहाँ होती है?
५. 'शरलॉक होम्स' का निर्माता सर ऑर्थर कानन डॉइल क्या व्यवसाय करता था?
६. साँप कैसे सूँघते हैं?
७. कौनसा प्रसिद्ध चित्र कभी एक राजा के जन्म-स्थान की शोभा बढ़ाता था?
८. क्या मेंढ़क अपना सर घुमा सकता है?
९. टिड्डे के खून का रंग कैसा होता है?
१० संसार की सब से प्राचीन मूर्ति कौन-सी है?

(उत्तर पृष्ठ ८ पर)

१. हिमालय का भगवान् की आत्मा धारण करनेवाले नगाधिराज के रूप में किसने वर्णन किया है?

२. चन्द्रगुप्त मौर्य की कथा किस नाटक में वर्णित है?

३. हर्षवर्धन की कथा किस पुस्तक में है?

४. ब्रिटिशों से 'सर' की उपाधि पानेवाले और उसका स्वीकार न करनेवाले भारतीय कवि कौन थे?

५. भारत की कौन-सी भाषा दाहिनी ओर के बाईं तरफ लिखी जाती है?

६. उस भाषा का निर्माण कैसे हुआ?

७. इस भाषा को लिखने के लिए किस लिपि का प्रयोग किया जाता है?

८. तुलसीदास के रामायण का ठीक ठीक नाम क्या है?

९. तुलसीदास कहाँ रहे और कब?

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीखें ।

उत्तर

आसामी, बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड, मराठी, उडिया : उत्तर ; **संस्कृत** : उदीचि; **मलयालम्** : वट्टकु; **तमिल** : वडक्कु; **सिंधी** : उत्तरू; **तेलुगु** : उत्तरामु; **काश्मीरी** : शुमाल; **उर्दू** : शुमाल; **पंजाबी** : उत्तर ।

क्या आपको विश्वास है ?

१. कि महाकाव्यों के काल का भारतवर्ष और आज का भारत एक ही है ?
२. कि लाल कपड़े को देखते ही बैल गुस्सा हो जाते हैं?
३. कि सभी पंछी घरौंदे बनाते हैं?

नहीं नहीं !

१. वह एक बहुत बड़ा देश था ।
२. बैलों की आँखें रंग नहीं देख सकतीं ।
३. उल्लू और तोते वृक्षों के जड़ों के खोंड़र में या खंड़हरों में रहते हैं ।

उत्तरावलि

वह कौन ?

रामानुज, श्रीरंगम् का मंदिर

इतिहास

१. सर सालार जंग १. जो हैद्राबाद के निज़ाम के प्रधान मंत्री थे ।
२. सोमनाथ का मंदिर ।
३. क्योंकि वह प्रभास पर स्थित है, जहाँ विश्वास किया जाता है कि श्रीकृष्ण ने अपने शरीर का त्याग किया था ।
४. अजन्ता और एलोरा ।
५. अशोक ।
६. कलिंग की लड़ाई । इसने अशोक का हृदय-परिवर्तन किया ।
७. मुंबई के अपोलो बन्दरगाह पर ।
८. सन १९११ में. राजा जॉर्ज और रानी मेरी के स्वागतार्थ ।

सामान्य ज्ञान

१. २७९९ मीटर ।
२. एक इञ्जन पर्याप्त है ।
३. एक सौ मिलियन से भी अधिक ।
४. मध्य अमेरिका में ।
५. डॉक्टर ।
६. अपनी ज़बान से ।
७. मोना लिसा । फ्रान्स के राजा फ्रॉंसिस १ ने अपने जन्म-स्थान में उसे लगा दिया था ।
८. नहीं, क्योंकि उसके गर्दन नहीं होती ।
९. सफ़ेद ।
१०. स्फिंक्स ।

साहित्य

१. कालिदास ।
२. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस ।
३. बाणभट्ट का हर्ष चरित्र ।
४. रवीन्द्रनाथ टागोर ।
५. उर्दू ।
६. पर्शियन और हिन्दी की आपसी लेन-दैन से । टर्की भाषा का भी उस पर प्रभाव है ।
७. पर्शियन ।
८. रामचरितमानस ।
९. वाराणशी में । उसकी कालावधि इ.स. १५३२ से १६२३ तक की है ।
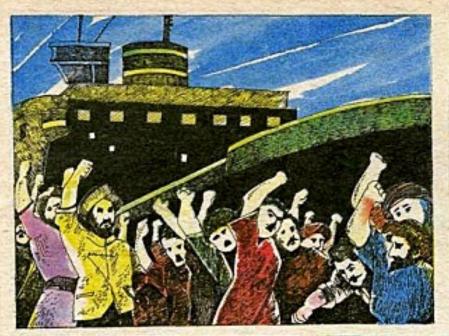
नेहरू की कहानी—४

सन १९८९ में दुनिया में कई दुखदायक घटनाएँ घटित हुईं । कॅनडा से आया 'कामकट्मारु' जहाज़ ब्रिटिश सरकार ने इस लिए रोका कि उन्हें उसमें क्रांतिकारियों के होने की आशंका थी ।जब यह जहाज़ बन्दरगाह में पहुँचा तो उसके यात्रियों को अनेक प्रकार से सताया गया ।

उन दिनों रौलट एक्ट अमल में लाया गया। उसके अनुसार ब्रिटिश शासन का विरोध करनेवालों को बन्दी बनाया गया और उन्हें बिना सुनवाई के कारागार में ठूँसा गया । इस कानून द्वारा समाचार-पत्रों की स्वतंत्रता को भी छीन लिया गया ।
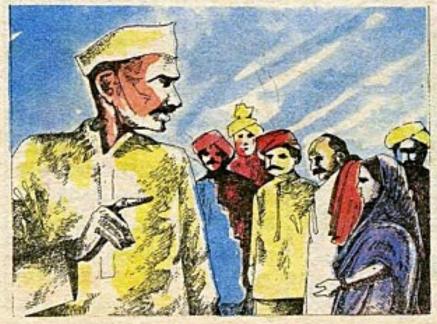
लगभग इसी समय महात्मा गांधीजी का स्वास्थ्य बिगड़ा । उनके विरोध के होते हुए भी रौलट एक्ट का अमल किया गया । इस पर महात्मा ने अखिल भारतीय स्तर पर उस कानून के विरोधी आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया । इस आंदोलन को उन्होंने नाम दिया 'सत्याग्रह' । तब यह निर्णय किया गया कि इस आन्दोलन के तहत सभी क्रांतिकारियों को रौलट एक्ट का उल्लंघन करना चाहिए ।
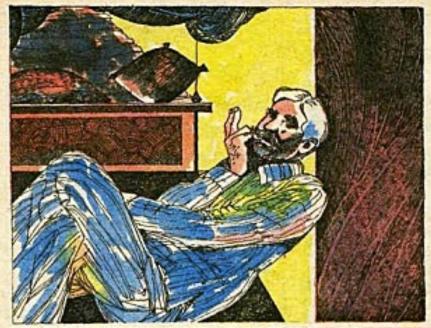
'सत्याग्रह' आंदोलन में जवाहरलाल भी शामिल हुए । अब उनका बन्दी बनाया जाना अवश्यंभावी था । मोतीलाल अत्यन्त व्याकुल हुए कि उनका पुत्र कारागार में फर्श पर कैसे सो सकेगा ? उन्होंने स्वयं ही घर पर फर्श पर सोने के कष्ट का प्रत्यक्ष अनुभव किया ।

उधर पंजाब में सैनिक शासन का अमल चल रहा था । उसके अंतर्गत अमृतसर के जलियनवाला बाग में भयंकर हत्याकांड़ हुआ । अपने प्रिय नेताओं के भाषण सुनने के लिए लोग इकठ्ठा हुए थे । तब अत्याचारी सेनाधिपति जनरल डायर ने उस निरीह और निहत्थी जनता पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया । इस हत्याकांड में सैकड़ों नर-नारी मौत के घाट उतारे गये और हज़ारों लोग घायल हुए ।
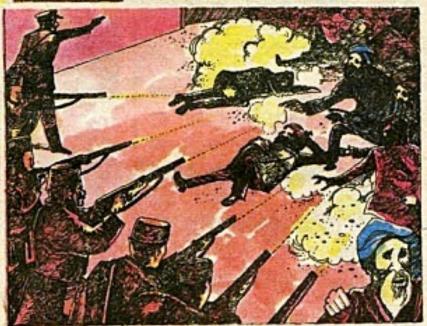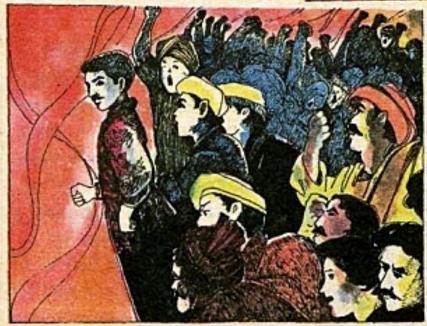
लोगों को डराने के लिए जनरल डायर ने हुक़्म जारी किया कि वे गली-कूचों में रेंगते चले जाए और सामने से कोई अंग्रेज़ गुज़र रहा हो तो उसे प्रणाम करें । छोटे बालकों को यह दण्ड दिया गया कि वे रोज़ दस-पंद्रह मील पैदल चलें और घंटों चिलचिलाती धूप में खड़े रह जाएँ ।

सैनिक कानून के रद होते ही अनेक काँग्रेस नेता पंजाब का निरीक्षण करने चले । पंडित मदन मोहन मालवीय तथा स्वामी श्रद्धानंद ने पुनरावास तथा विस्थापितों की योजनाओं को अपने हाथ में लिया । कई लोग सत्याग्रह-आंदोलन में सैनिक की तरह शामिल हुए ।
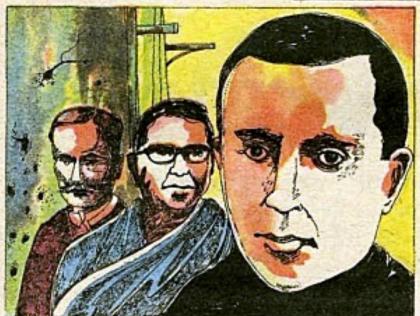
जलियनवाला बाग के हत्याकांड की जाँच करने के लिए काँग्रेस-सभा ने एक कमिटी को अमृतसर में भेजा । उस समिति के नेता थे पं. मोतीलाल नेहरू तथा चितंजन दास । चित्तरंजन दास की सहायता करनेकी ज़िम्मेदारी जवाहरलाल नेहरू को सौंपी गई । जनरल डायर द्वारा किये गये दारुण हत्याकांड के समाचार सुनकर जवाहरलाल को बड़ा ही आश्चर्य हुआ ।

अपना काम समाप्त होने पर एक दिन जवाहरलाल रात को रेल-गाड़ी में दिल्ली के लिए रवाना हो गये । वे डिब्बे में चढ़ गये और खाली बर्थ पाकर उस पर लेट गये । सवेरे जाग गये तो उन्होंने देखा डब्बा सैनिकों से खचाखच भरा पड़ा है । सैनिकों के बीच बैठकर जनरल डायर सारी लज्जा छोड़ कर हत्याकांड के अपने कुकृत्यों की आप डींग मार रहा था । जवाहरलाल ने अपने कानों से यह सारा वृत्तांत सुना था ।
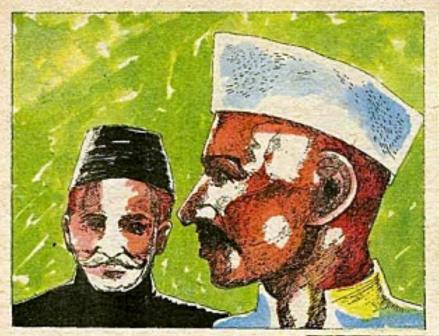
सन १९१९ में काँग्रेस महासभा का अधिवेशन अमृतसर में हुआ । पं. मोतीलाल नेहरू उस अधिवेशन के अध्यक्ष थे । यहीं भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के नेता के रूप में महात्मा गाँधी को स्वीकार किया गया ।

१ अगस्त १९२० को बंबई में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्वर्गवास हुआ । सन १९०६ में श्री तिलक ने श्री अरविंद के साथ मिलकर सूरत के काँग्रेसी अधिवेशन में संपूर्ण स्वराज्य की माँग की थी । सन १९१० में श्री अरविंद राजनैतिक क्षेत्र से हट गये । फिर श्री तिलक के निधन के पश्चात् काँग्रेस के नेतृत्व के लिए गाँधीजी सन्नद्ध हो गये ।
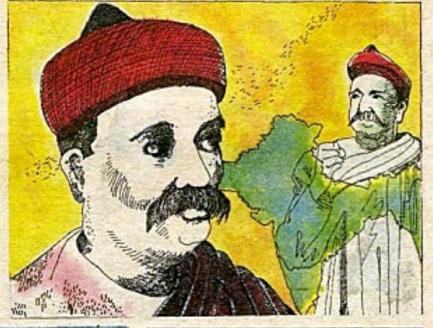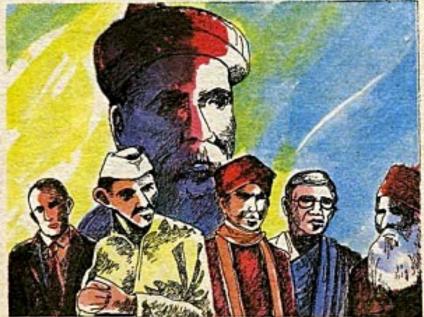
तिलक की मृत्यु के दिन प्रातःकाल ही गाँधीजी तथा जवाहरलाल बंबई पहुँच गये । जवाहरलाल नेहरू ने कहा – 'अपने प्रेमपात्र महान् नेता को श्रद्धांजलि अर्पण करने दस लाख आबादीवाला पूरा नगर ही उमड़ पड़ा था ।' उस विशाल सभा में गांधीजी तथा जवाहरलाल ने भाग लिया था ।

किसी गाँव में एक ज़मींदार रहता था। उसका नाम था अनंतराम। उसके पास एक घोड़ा-गाड़ी थी। वह हमेशा गाँववालों के काम आती थी। गाँव में कोई अच्छा-सा वैद्य न था। इस लिए गाँव में कोई सख्त बीमार हो जाए या किसी को साँप काटे तो असमय आधी रात बीते भी अनंतराम की गाड़ी उसे पासवाले शहर में ले जाती। इस तरह अनंतराम हमेशा लोगों पर उपकार करता था।

यों कुछ वर्ष बीत गये और अनंतराम का देहान्त हो गया। अंतिम घड़ी में उसने अपने पुत्र नरसिंह को बुलाकर समझाया था - "बेटा, अगर संकट में पड़ा कोई गाड़ी माँगने आता है, तो उसे ज़रूर गाड़ी दिया करो। लोगों के कष्टों में हाथ बँटाया करो।"

नरसिंह ने अपने पिता को वचन तो दे दिया, पर उसका पालन करना उसके लिए संभव न हो सका। समय-असमय पर अगर कोई मुसीबत-ज़दा आदमी उसके पास आता और गाड़ी भिजवाने की प्रार्थना करता तो अपनी नींद में खलल डालनेवाले पर वह बरस पड़ता। गुस्से में आकर उसे घर से बाहर कर देता।

थोड़े ही दिनों में गाँववाले समझ गये कि नरसिंह से गाड़ी माँगना व्यर्थ का प्रयास है। इस लिए लोग स्वर्गीय अनंतराम को मन-ही-मन श्रद्धांजलि अर्पण करते और जीवित नरसिंह को जी-भर कोसते रहते।

एक दिन आधी रात बीते रंगनाथ नाम के एक आदमी की बीस साल की जवान लड़की एकदम सख्त बीमार हुई। शहर में वैद्य के पास तुरन्त जाना ज़रूरी हुआ। रंगनाथ अपनी पुत्री को कंधे पर डालकर नरसिंह के घर पहुँचा, उसे नींद से जगाया और गाड़ी के बारे में प्रार्थना की।

निद्रा-भंग होने के कारण नरसिंह को बहुत

रमेश शर्मा

पेश की – "महाराज, इस नरसिंह ने मेरी पुत्री को काम पर बुलाया, मज़दूरी को लेकर दोनों के बीच झगड़ा हुआ, और फिर गुस्से में आकर उसने मेरी लड़की को मार डाला । "

चूँकि नरसिंह कभी किसी की मदद नहीं करता था, न्यायाधिकारी भी बहुत दिनों से नरसिंह पर नाराज़ था । मौक़ा मिले तो नरसिंह को कठोर दंड देने की न्यायाधिकारी की इच्छा थी । ऐसा मौक़ा आज उसके हाथ आया था । वह नरसिंह को अच्छा पाठ पढ़ाना चाहता था ।

इस बीच न्यायाधिकारी की पत्नी ने उसे अन्दर बुलाया और पूछा – "मैंने कहा, आप नरसिंह को क्यों दण्ड देना चाहते हैं ?"

न्यायाधिकारी ने उत्तर दिया – "उस दुष्ट को कड़ी से कड़ी सज़ा देनी चाहिए । इससे सारा गाँव प्रसन्न हो जाएगा । "

न्यायाधिकारी की पत्नी ने दृढ स्वर में पति को समझाया – "आप भी कैसे अजीब आदमी हैं । आप को याद है, एक बार हमारे लड़के को साँप ने काटा था । उस समय अनंतराम ने आप होकर अपनी गाड़ी भिजवा दी थी । तभी तो हम अपने बेटे को बचा सके । आज वही हमारा लड़का बड़ा होकर कचहरी में सेवा कर रहा है । ऐसे परोपकारी अनंतराम का पुत्र दुष्ट भले ही हो, कृतज्ञता के साथ उसकी मदद करना हमारा नैतिक कर्तव्य है । आप को यह क्या कुबुद्धि हो रही है, जो आप नरसिंह को दण्ड देने पर तुले हैं । किसी भी हालत में

गुस्सा आया । वह रंगनाथ पर बरस पड़ा – "हर ऐरे-गैरे को मेरी घोड़ा-गाडी देने के लिए मैं सब का नौकर थोड़े ही हूँ? यह गाड़ी तुम्हारे बाप की बपौती तो है नहीं । फिर गाड़ी माँगने के लिए मत आना । चले जाओ चुपचाप यहाँ से । " यों डाँटते हुए नरसिंह ने धडाम से किवाड़ बन्द कर लिये ।

इस बीच रंगनाथ की लड़की अपने पिता के हाथों में दम तोड़ बैठी । रंगनाथ देर तक रोता रहा । फिर अपनी लड़की की मौत का कारण बने नरसिंह से बदला लेने का उसने निश्चय किया ।

अपनी लड़की के शव को वहीं पर छोड़कर अब रंगनाथ सीधे न्यायाधिकारी के घर पहुँचा और उसने नरसिंह के खिलाफ़ अपनी शिकायत

नरसिंह को दण्ड देना उचित नहीं लगता मुझे ।''

न्यायाधिकारी ने पल-दो-पल सोचा और उसे अपनी पत्नी का कथन ठीक मालूम हुआ । उसने रंगनाथ को बुलाया और कहा - "देखो रंगनाथ, मैं एक बात भूल गया - कल मुझे एक रिश्तेदार की शादी में जाना आवश्यक है । मैंने एक व्यक्ति को गाड़ी लाने के लिए पड़ोस के गाँव में भेजा है । इस कारण ऐसी जल्दबाज़ी में फ़ैसला सुनाना संभव नहीं । मेरी बात मानो, तुम सीधे राजा के पास चले जाओ ।''

विवश होकर रंगनाथ राजा के पास पहुँचा और नरसिंह के बारे में अपनी शिकायत पेश की । राजा ने नरसिंह के गाँव के कुछ लोगों को बुलाया और पूछताछ की । हर एक ने नरसिंह के बारे में कुछ बुरा ही कहा । तब राजा ने रंगनाथ के अभियोग पर विश्वास किया और नरसिंह को फाँसी की सज़ा सुनायी ।

दूसरे दिन नरसिंह को फाँसी पर लटकाना था । पर वधिक ने अपने अस्वस्थ होने का बहाना किया और वह काम पर अनुपस्थित रहा । यों दस दिन बीत गये, पर वधिक काम पर ही नहीं आया ।

अब राजा के मन में शक हुआ कि वधिक जान-बूझकर फाँसी के काम में विलंब कर रहा है । इस लिए वास्तविक स्थिति को जानने के लिए राजा छद्म वेष में वधिक के घर पहुँचा ।

वधिक की पत्नी अपने पति से कह रही थी - "इस प्रकार बीमारी का बहाना बनाकर तुम कितने दिन राजा को धोखा दे सकोगे ? किसी न किसी दिन नरसिंह को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाना ही पड़ेगा न ?''
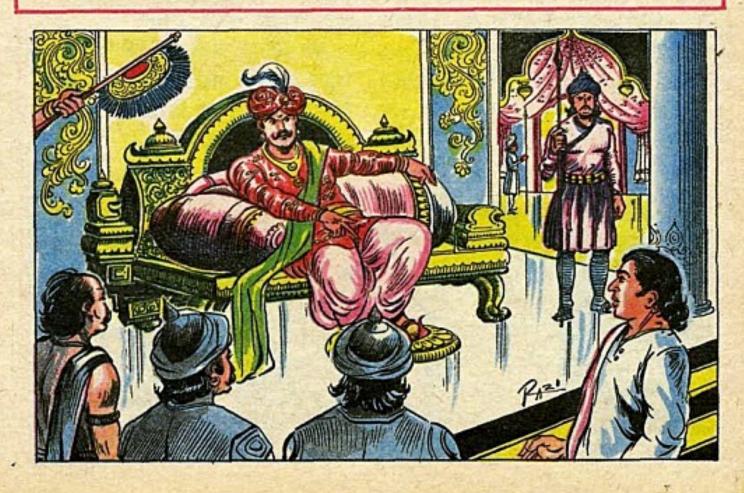
वधिक ने समझाते हुए बीवी से कहा - "देखो, राजा भले ही मुझे फाँसी की सज़ा दें, मैं किसी भी हालत में नरसिंह के गले में फाँसी का फंदा नहीं डालूँगा । हम एक ही गाँव के रहनेवाले हैं । बचपन में मैं बीमारी का शिकार हो मौत के मुँह में जानेवाला था, जब नरसिंह के पिता ने अपनी घोड़ा-गाड़ी भेजकर मेरे इलाज़ का प्रबंध किया और उन्हीं की बदौलत आज मैं ज़िंदा हूँ । ऐसे पुण्यात्मा के पुत्र को फाँसी पर चढ़ाकर मैं अपने सिर पाप की गठरी नहीं लेना चाहता । तुम्हीं बताओ, अनंतराम जैसे पुण्यात्मा का पुत्र भला दुष्ट कैसे हो सकता है ? मुझे लगता है, राजा के निर्णय में कुछ ग़लती अवश्य है । "

ये सब बातें सुनकर राजा भी विचार करने लगा । उसे लगा कि रंगनाथ को फिर एक बार बुलाकर संबंधित निर्णय पर पुनर्विचार किया जाए ।

दूसरे दिन राजा ने रंगनाथ को बुलाकर गरज़ कर पूछा - "भगवान् की क़सम सच सच बताओ - क्या नरसिंह ने तुम्हारी लड़की की हत्या की है ? मैं कहता हूँ यह झूठ है । तुम नरसिंह पर बेकार दोषारोप कर रहे हो । "

अब रंगनाथ डर गया और उसने राजा को सच्ची सब बात बता दी ।

राजा ने नरसिंह को मुक्त कर दिया और कहा - "देखो नरसिंह, तुम्हारे पिता का स्वर्गवास हो जाने पर भी उनके परोपकार के कारण तुम बच गये । तुम जीवित रह कर भी अपनी दुष्टता के कारण अपने को निर्दोष प्रमाणित न कर सके । तुमने हत्या नहीं की है । पर किसी ने भी सच्ची बात नहीं बता दी । आज तुम अनंतराम के पुत्र के रूप में बच गये, नरसिंह के रूप में नहीं । इस घटना से तुम सबक़ सीखो और अपने दिल को बदल डालो । तुम्हारे पिता के समान सब की यथाशक्ति सहायता करो । इससे कोई तुम्हारा बाल बाँका नहीं कर सकेगा । समझे?"

अब नरसिंह समझ गया कि परोपकार की भावना का क्या महत्त्व है । उसमें कितनी शक्ति निहित है । उस दिन से अपने पिता के मार्ग पर चलना उसने शुरू किया ।
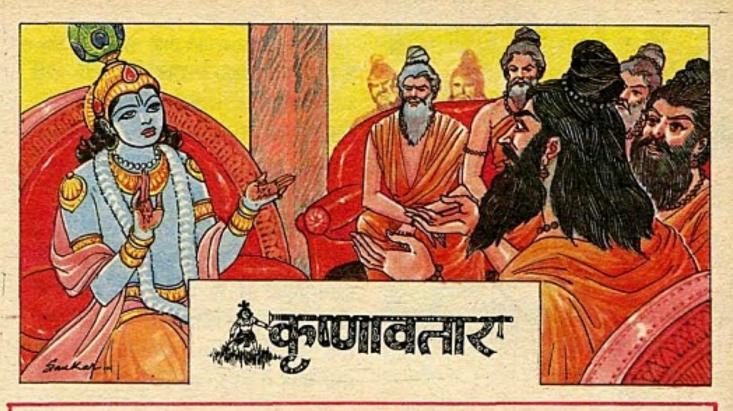
श्रीकृष्ण ने मुनियों से कुशल-प्रश्न किये और उनका यथोचित आतिथ्य किया । अत्यन्त प्रसन्न होकर मुनियों ने बदरी-फलों का उपहार सेवा में समर्पित करते हुए कहा – "श्री कृष्ण, एक महान् कार्य मन में रखकर ही हम आपके पास पहुँचे हैं । भूदेवी का पुत्र नरक राक्षसों का नेता है । वह महान् पराक्रमी और उद्दंड है । वह समुद्रों को सुखा सकता है, पृथ्वी को कँपा सकता है, पहाड़ों को धँसा सकता है । इस समय सारे लोकों में वह उत्पात मचा रहा है । एक बार वह हमारे बदरीवन में आ धमका । हम यज्ञ-कार्य में दत्तचित्त थे, उसने हमें आदेश दिया हम देवताओं के प्रति यज्ञ न कर उसके प्रति करें । हमने उस आदेश को नहीं माना । इस पर मारे गुस्से के उसने अपने सेवकों के द्वारा हमारी यज्ञाग्नि बुझा दी । सारी यज्ञ-सामग्री को ध्वस्त कर दिया और हमारी स्त्रियों को बन्दी बनाकर ले गया । इस प्रकार हमारा यज्ञ-कर्म भग्न हो गया और हमारी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई । उसके डर से हम अत्यन्त दुखी हो गये हैं । अब आपको छोड़ कौन हमारी रक्षा कर सकते हैं ?"

मुनियों की बातें सुनकर श्रीकृष्ण को बड़ा आश्चर्य हुआ । नरकासुर का उत्पात जानकर उन्हें बड़ा क्रोध भी आया । श्रीकृष्ण थोड़ी देर के लिए मौन रहकर विचारों में डूब गये । यह देख मुनि कुछ शंकाकुल होते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगे ।

श्रीकृष्ण ने मुनियों को उद्देश्य करके कहा – "नरक यहाँ तक आगे बढ़ा ? उस राक्षस के अत्याचारों की कथा बड़ी भयानक है । आप

लोग चिन्ता मत कीजिए । मैं उस राक्षस का अवश्य अंत करूँगा । आप सारा भय छोड़ कर यहाँ से प्रस्थान कीजिए और अपने नित्य कर्मों का आचरण प्रारंभ कीजिए । आज तक कई राक्षसों का संहार मैंने कैसे किया है आप जानते ही हैं । अब मेरे हाथों नरकासुर का विनाश निश्चय ही है । यह नरकासुर महान् पराक्रमी है अवश्य, उसका संहार करने में कुछ अधिक समय लग सकता है । फिर भी आप चिंता न करें । सब को बुरी तरह परेशान करनेवाले इस अधम का सर्वनाश होकर ही रहेगा । " यों श्रीकृष्ण ने मुनियों को अभय-दान दिया ।

साक्षात् श्रीकृष्ण के मुँह से अभय-दान पाकर मुनिजन अत्यन्त प्रसन्न हुए । उन्होंने श्रीकृष्ण को शतशः धन्यवाद दिये और उनसे प्रेमपूर्वक विदा लेकर बदरीवन के आश्रम की ओर चल निकले ।

मुनियों के प्रस्थान के बाद इन्द्र, अन्य दिक्पालों के साथ द्वारका नगरी में उतर पड़े । श्रीकृष्ण आगे आये और उन्होंने बड़े प्रेम से इन्द्र का स्वागत किया । इन्द्र अन्य सभी यादव-प्रमुखों से भी मिले, और उनके प्रति अपना आदर भाव प्रकट किया । इसके बाद सभी लोग विचार-विमर्श करने के लिए सुधर्म सभा-भवन में इकट्ठा हुए ।

श्रीकृष्ण का हाथ अपने हाथ में लेते हुए इन्द्र ने निवेदन किया - "महात्मन्, एक विशेष उद्देश्य से आपके दर्शन करने आया हूँ । मेरा नम्र निवेदन सुनेंगे ? दैत्यों का नेता नरकासुर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करके अत्यन्त विच्छृंखल हो उठा है ।उसने युद्ध में देवताओं को बुरी तरह पराभूत किया । उसके आक्रमण और अत्त्याचारों से तंग आकर हम लोग अपना घर-द्वारा छोड़ कर मानव लोक में भाग आये हैं । हमारे घरों में घुसकर उसने हमारी सारी संपत्ति लूट ली । हम अपनी विपदा की कथा सुनाएँ तो किसे ? अत्यत्र दुर्लभ ऐसे अदिति देवी के कुण्डल भी उसने हरण कर लिये । मुनियों के आश्रमों का ध्वंस किया । उसने सुना है कि आपने जगत की रक्षा का संकल्प करके अनेकों राक्षसों का संहार किया है । अतः अब वह आपको भी पराजित करने के सपने देख रहा है । हम सोचते हैं अब आप

उसके संहार का पुण्य-कर्म अपने हाथों में ले लें । इससे सब लोकों का कल्याण होगा । आपका वाहन बनने के लिए ये गरुड मेरे साथ आये हुए हैं । " कहते हुए इन्द्र ने श्रीकृष्ण को गरुड के दर्शन कराये ।

श्रीकृष्ण ने अपने आसन से उतरते हुए इन्द्र से निवेदन किया – "ये सारी बातें थोड़ी देर पहले मैंने मुनियों से भी सुन लीं हैं । आपके कथन से मेरा निश्चय और भी दृढ़ हो गया है । हम लोग अभी प्रागज्योतिषपुर रवाना होने की तैयारियाँ कर रहे हैं । आपने बहुत अच्छा किया कि मुझे नरकासुर के समस्त कुकृत्यों से परिचित कराया है । देव और ऋषि नरकासुर की लीलाओं से बहुत दुखी हो गए हैं । उन सब को संकटमुक्त करना अब मेरा प्रथम कर्तव्य है । बाकी सब कार्य छोड़कर बस अब मैं इसी में दत्तचित्त हो जाता हूँ । बहुत अच्छा हुआ वाहन के रूप में गरुड़जी को आप मुझे सौंप रहे हैं ! "

श्रीकृष्ण ने अपने शंख, चक्र आदि आयुधों को सज्ज किया और सत्यभामा के पास अपने जाने का समाचार भेज दिया । श्रीकृष्ण गरुड पर आरूढ हो गये । बुज़ुर्गों ने उनको आशीर्वाद दिये । पुरोहितों ने स्तोत्र-पाठ किये । देवेन्द्र इन्द्र पथ-प्रदर्शक बने और श्रीकृष्ण उनका अनुसरण करने लगे । थोड़ी देर के लिए भूतल पर यात्रा करके अब इन्द्र और श्रीकृष्ण गगन-मार्ग से प्रयाण करने लगे ।

श्रीकृष्ण ने आकाश-मार्ग से प्रागज्योतिषपुर को एक नज़र देख लिया । उस नगर में प्रवेश करना किसी के लिए सहज संभव न था । उस नगर की सुरक्षा-व्यवस्था को श्रीकृष्ण ने भली
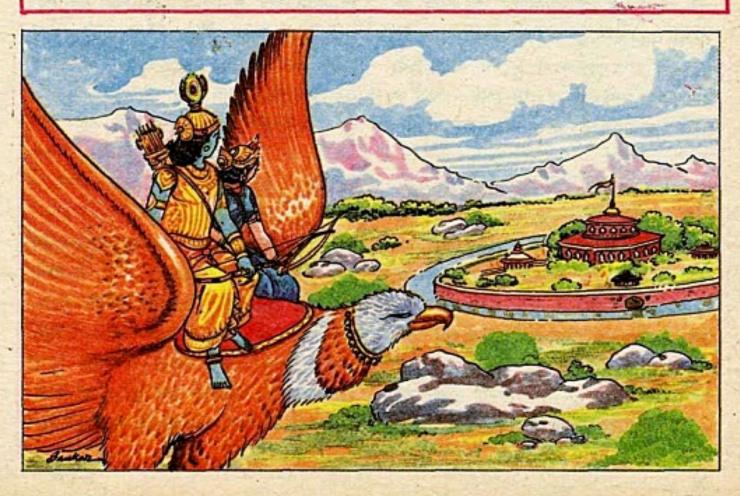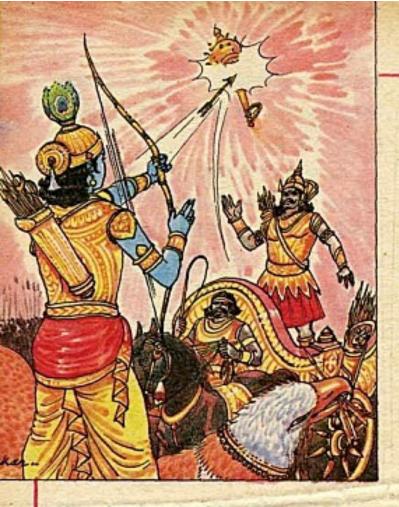
भाँति देख लिया । नरकासुर के भवन की सुरक्षा करनेवाले राक्षसों को अच्छी तरह देख लिया । अब श्रीकृष्ण ने इन्द्र को बिदा किया और स्वयं आगे बढ़े । नगर-रक्षक राक्षसों से पहले सामना किया और अनेक राक्षसों का वध किया ।

मुरासुर बड़े हौसले से श्रीकृष्ण से जूझ पड़ा । दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ । श्रीकृष्ण ने अपने एक तीक्ष्ण अस्त्र से मुरासुर का सिर काट दिया । इसके बाद निशुंभु नामक राक्षस श्री कृष्ण से युद्ध करने के लिए तैयार हो गया । उसने सत्यभामा का हाथ घायल कर दिया, उससे खून बह निकला । अब श्रीकृष्ण क्रोधावेश में आ गये और उन्होंने अपने बाणों से निशुंभु के हाथ और सिर काट डाले । फिर हयग्रीव, अघोरपाल, विरूपाक्ष, प्रापण, पंचजन इत्यादि चौरासी राक्षस-वीर श्रीकृष्ण के हाथों मारे गये ।

इसके उपरान्त श्रीकृष्ण ने नगर के द्वार की रक्षा करनेवाले राक्षसों का संहार किया और उस द्वार के समीप पहुँचे ही थे कि राक्षस-सेनाएँ उन पर टूट पड़ी । श्रीकृष्ण ने बड़ी आसानी से उस राक्षस-दल को ध्वस्त कर दिया । इतने कांड के उपरान्त अब नरकासुर स्वयं श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिए संनद्ध हो गया । अकेले युद्ध करने के लिए आये श्रीकृष्ण को उद्देश करके उसने कहा - "सुनो, मुझे नरक कहते हैं । मैंने इन्द्र आदि देवताओं को पराजित करके तीनों लोकों को थर्रा दिया है । मेरे सामने बड़े बड़े साहसी और पराक्रमी वीर भी किसी काम के न रहे । तुम किस खेत की मूली ? क्या काम लेकर यहाँ आये हो ? यह विशालकाय पक्षी कौन है ? साथ में किस नारी को लाये हो ? सब साफ़ साफ़ बता देना । मैं अभी तुम्हारा वध करके इस नारी को अपने अधीन कर लूँगा । अब तुम भाग न जाना, मेरे साथ युद्ध के लिए तैयार हो जाओ । समझे ?"

नरकासुर की बक-बक सुनकर श्रीकृष्ण हँस पड़े । उन्होंने उसे समझाया - "मैं भी तीनों लोकों में प्रसिद्ध हूँ । मैं नहीं जानता हूँ कि तुमने मेरे बारे में सुना है कि नहीं । मुझे वासुदेव कहते हैं । इस स्त्री का नाम सत्यभामा है, वह मेरी पत्नी है । यह पक्षी पक्षी-जाति का राजा गरुड़ है, जो मेरा वाहन है ।
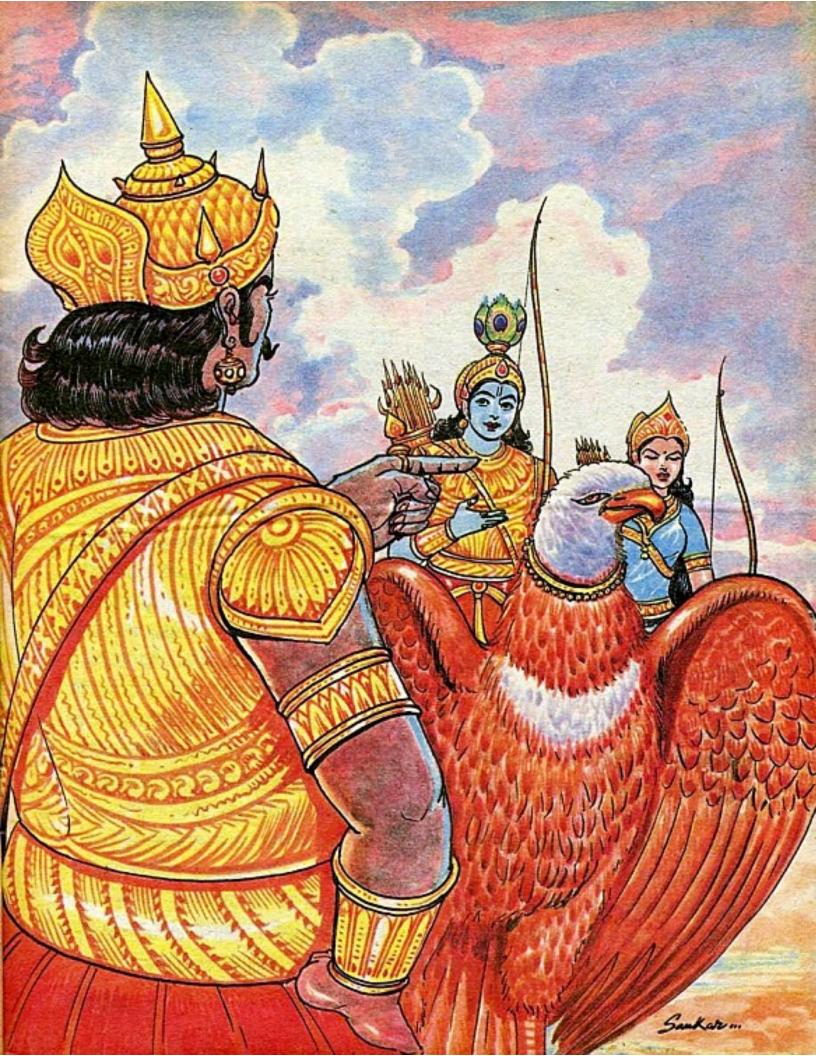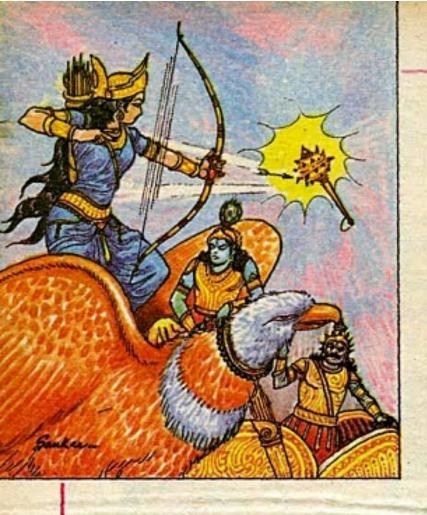
मैं यहाँ एक विशेष उद्देश्य से आया हूँ । वह है तुम्हारा संहार करके जगत् का कल्याण करना । ''

मुस्कुराते हुए नरक ने कहा - ''ओह, यह बात है? तुम्हीं हो वह वासुदेव ? तुम्हारे साथ युद्ध करने के लिए मैं लालायित हूँ । तुम अपनी सारी शक्तियों का युद्ध में प्रयोग करो । अच्छा हुआ मेरे सामने आ गये । अब अपने प्राण बचा कर यहाँ से नहीं जा सकोगे । '' तुरन्त नरकासुर ने कृष्ण के साथ युद्ध प्रारंभ किया । उन दोनों के बीच जो युद्ध हुआ, उसे देख राम-रावण के युद्ध की याद आई । दारुण और अवर्णनीय युद्ध हुआ । इस युद्ध में श्रीकृष्ण बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गये ।

यह देख सत्यभामा घबराई नहीं । उसने श्रीकृष्ण के माथे पर धँसे बाण को अपने हाथों से निकाला, तो खून की धारा बहने लगी । उसने घाव को दबा रखा और श्रीकृष्ण की शुश्रूषा की । गरूड़ ने अपने पंखों से श्रीकृष्ण को पंखा झला और उसकी थकावट दूर की । थोड़ी देर में श्रीकृष्ण होश में आ गये और फिर सत्यभामा की ओर देखकर बोले - ''देखो, मैं थक गया हूँ । थोड़ी देर के लिए तुम युद्ध कर सकोगी ?'' तब सत्यभामा ने श्रीकृष्ण का धनुष्य और बाण अपने हाथ में लिये ।

सत्यभामा ने नरकासुर पर लगातार बाणों की वर्षा की । तब नरक अट्टहास कर बोल उठा - ''छीः छीः ! श्रीकृष्ण ने स्वयं युद्ध करना छोड़ कर एक औरत को मुझे पराजित करने के लिए नियुक्त किया । '' नरकासुर ने अपने तीक्ष्ण बाण सत्यभामा की ओर छोड़ना प्रारंभ किया । वे बाण सत्यभामा के वक्ष, हाथों और पीठ में चुभ गये । उनकी ज़रा भी पर्वाह न करते हुए सत्यभामा ने अत्यन्त क्रोधावेश में आकर नरकासुर की ध्वजा तोड़ दी और उसके रथ में जोड़े घोड़े को मार डाला । फिर उसके सारथी का वध किया । नरकासुर ज्यों ही सत्यभामा पर तीर चलाने के लिए प्रत्यंचा खींचता त्यों ही सत्यभामा उसे तोड़ डालती । यों नरकासुर के तीन बाण लगातार टूट गये । अब उसने अपने हाथ में गदा धारण की और उसे जोर से सत्यभामा पर फेंक दिया । पर सत्यभामा ने उसे बीच में ही चूर्ण कर दिया । इस प्रकार नरकासुर का प्रत्येक आयुध बेकार साबित होता रहा ।

सत्यभामा की यह अद्भुत युद्ध-कुशलता देख श्रीकृष्ण अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके माथे पर फूटा पसीना पोंछ डाला । श्री कृष्ण ने कहा - "सत्यभामे, तुम बहुत थकी मालूम हो रही हो, अब युद्ध को समाप्त करो । " इस पर श्रीकृष्ण ने अपना कंठहार निकालकर सत्यभामा के कंठ में पहना दिया । सत्यभामा और रुक्मिणी दोनों के मन में उस हार को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा बहुत दिनों से थी । पर अब तक कोई उसे प्राप्त नहीं कर सकी थी । सत्यभामा इस हार को प्राप्त कर परम संतुष्ट हुई ।

फिर श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के हाथ से धनुष्य लेकर नरकासुर के साथ युद्ध करना प्रारंभ किया । इस बीच नरक किसी और रथ पर सवार हो श्रीकृष्ण, सत्यभामा और गरुड़ पर बाणों की वर्षा करने लगा । श्रीकृष्ण ने नरकासुर का नया रथ, उसके घोड़े और सारथी को निशाना बनाकर उनका संहार किया । अब नरक का क्रोध और तीव्र हो गया और वह हाथ में गदा लेकर युद्ध-भूमि पर उतर पड़ा। श्रीकृष्ण के वक्ष का निशाना बनाकर फेंकी उसकी गदा को कृष्ण ने बड़ी सरलता से चूर-चूर कर दिया । तब नरकासुर ने असंख्य अन्य आयुध, वृक्ष तथा पत्थर फेंकना शुरू किया, पर कोई फ़ायदा न हुआ ।

अंत में श्रीकृष्ण ने नरक पर अपने सुदर्शन चक्र का प्रयोग किया । सुदर्शन चक्र ने नरकासुर का सिर धड़ से अलग कर दिया । इस प्रकार नरकासुर के संहार से पृथ्वी का एक भारी संकट टल गया । उस समय भूदेवी स्वयं मानव का रूप धारण करके वहाँ उपस्थित हो गई और उसने नरक के शव का आलिंगन किया । उसके कानों में पड़े दिव्य मणि-कुंडल उतार लिये, और सीधे श्रीकृष्ण के पास पहुँची । हाथ जोड़ कर रोते रोते उनसे कहा - "महात्मन्, आप ही ने मुझे यह पुत्र प्रदान किया और अब इसको लोक-कंटक बताकर मार भी डाला । अब देवता तथा मुनि सुखपूर्वक जी सकेंगे, इसमें कोई शक नहीं । ये रत्न-कुंडल इन्द्र को पराजित करके लाये गये थे । इन्हें स्वीकार कीजिए । नरक के पुत्र की रक्षा करके उसका राज्य उसे दीजिए । "
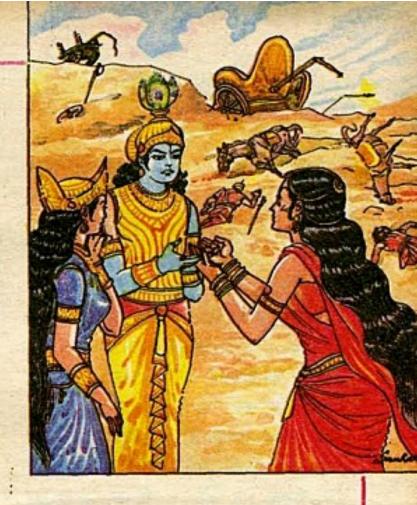
श्रीकृष्ण ने भूदेवी की बात मान ली । तब भूदेवी अदृश्य हो गई । श्रीकृष्ण ने नरकासुर

के शव की उत्तर-क्रिया विधिवत् संपन्न की और फिर उसके पुत्र भगदत्त का राज्याभिषेक करवाया ।

नगर के अन्दर अपार निधियाँ पड़ी थीं । नरकासुर के सेवकों ने देव-लोक में लूटपाट मचाकर उन्हें संग्रहित किया था । नरक के अनुचरों ने उन सारी निधियों को लाकर श्रीकृष्ण को सौंप दिया ।

देव लोक की सोलह हज़ार एक सौ नारियों को नरक ने बन्दी बनाकर मणि-शैल के पास रखा था । श्रीकृष्ण सत्यभामा को लेकर वहाँ पहुँचे । उन बन्दी स्त्रियों ने श्रीकृष्ण से कहा - "हम देवता-नारियाँ हैं । नारद ने एक बार हमारा दुख देखकर हमें सान्त्वना दी थी - तुम लोग चिन्ता मत करो । श्रीविष्णु मानव का अवतार ग्रहण कर नरकासुर का वध करेंगे । उनके वचन से आश्वस्त होकर हम आज तक सारे दुखों को झेलती आई हैं । अब हम सब धन्य हो गईं । "

श्रीकृष्ण ने स्नेहभरी दृष्टि से उनकी तरफ देखते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनके सभी मनोरथ पूर्ण हों । उनके लिए पालकियाँ लाने का आदेश राक्षस-सेवकों को दिया । अब श्रीकृष्ण ने उस मणि-शैल को चारों तरफ घूमकर देखा । और उसके एक शिखर को वृक्षों और पक्षियों सहित अलग कर उसे गरुड़ पर रख दिया । गरुड़ ने भी बड़ी आसानी से उसे ढोया । पर्वत शिखर सहित श्रीकृष्ण गरुड़ पर सवार हुए और इन्द्र की नगरी में पहुँचे । वहाँ इन्द्र और शचीदेवी से प्रेमपूर्वक मिले । शची और सत्यभामा ने एक दूसरे को आलिंगन दिया। कृष्ण ने अपने साथ लाये कुंडल इन्द्र को प्रदान किये । नरकासुर का नाश करने पर शची ने इन्द्र और सत्यभामा को बधाइयाँ दीं । और पूछा - "सत्यभामे, मैं तुम्हारी मन-पसन्द वस्तु तुम्हें देना चाहती हूँ । बताओ, तुम्हें क्या चाहिए ?"

उत्तर में सत्यभामा ने कहा - "मुझे किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है । मुझे केवल तुम्हारा स्नेह मात्र चाहिए । वह तुम दे ही रही हो । "

चावल में कंकड़

रत्नगुप्त नाम के एक धनी व्यापारी के पास सुधाम नाम का एक नौकर था । वह अपने मालिक के हर आदेश का पालन बडी लगन व निष्ठा से किया करता था । रत्नगुप्त भी सुधाम के प्रति प्रेम-भाव रखता था । वह उस से अपने परिवार के सदस्य जैसा ही बर्ताव करता था ।

एक दिन रत्नगुप्त के घर धनगुप्त नाम का एक रिश्तेदार आया । उसका अपनी जीभ पर बिलकुल नियन्त्रण नहीं था । एक दिन धनगुप्त का सुधाम ने अपने मालिक की ओर देखकर कुछ प्रतिवाद नहीं किया ।

इसके बाद रत्नगुप्त ने धनगुप्त को अलग लेकर समझाया, "सुधाम यदि कभी कोई गलती करता है, तो मैं उसे मीठे स्वर में समझाता हूँ । आज तुम ने अकारण ही उसे गाली दी है, लोगों से व्यवहार का यह कोई अच्छा तरीका नहीं है ।"

इस पर भी धनगुप्त अपने किये का समर्थन करते हुए बोला, "बड़े व धनाढ्य लोगों में खीझने की आदत होती है । उस का प्रयोग आख़िर हम किसपर कर सकते हैं ? राजा पर प्रदर्शित करें तो कारागार का दण्ड भुगतना पड़ेगा; समान स्तर के लोगों पर प्रकट करने से मित्र शत्रु बन जायेंगे; साधारण लोगों पर गुस्सा उतारने से हमारा व्यापार धंधा ठप्प हो जाएगा; पत्नी व बच्चों को आँखें दिखाने से परिवार नरक तुल्य बन कर सुख-शान्ति नष्ट होगी । इसीलिये हमें चाहिये कि आवश्यकता पड़नेपर अधिक नौकरों को नियुक्त करके हम अपना गुस्सा उन्हीं पर उतारते रहें । हमारी डाँट-डपट व गालियाँ सुननी नहीं हों तो हमें नौकरों की आवश्यकता ही क्या है ?"

रत्नगुप्त इसपर खीझकर बोला, "हम अगर बात बात पर नौकरों को गालियाँ सुनाते रहे तो हमें नौकर मिलना ही मुश्किल होगा न !"

"अरे छोड़ो भी ! इस देश में ऐसे ग़रीब लोग असंख्य हैं, जो हमारी गालियाँ सुनकर भी

प्रसाद राव

सिक्का पकड़ा दें । देखो, वह खुष हो जाएगा और हमेशा इस बात का इन्तज़ार करता रहेगा कि कब मालिक फिर से गालियाँ सुनाई दे !"

"मैं फिर भी तुम से पूछना चाहता हूँ, कि दरअसल नौकरों को गालियाँ सुनाए ही क्यों !" रत्नगुप्त ने फिर अपनी ही बात दुहरायी ।

"नौकरों को बराबर गालियाँ सुनाते रहने से हमारी सारी गालियाँ खर्च हो जायेंगी, और फिर हमारी पत्नी, बच्चे तथा रिश्तेदारों व मित्रों को सुनाने के लिये गालियाँ बचेंगी नहीं और तब हमारा जीवन कैसा आनंददायक रहेगा ! रही तुम्हारे सुधाम की बात ! उसका फैसला मैं अभी किये देता हूँ । देखते रह जाओ ।"

इतना कहकर सुधाम को उसने अपने पास बुलाया और कहा, "सुनो सुधाम, अभी अभी मैं ने तुम्हें गालियाँ सुनायी थीं उसका बुरा मत मानो । मैं कभी कभी गुस्से से पागल हो जाता हूँ और अपने आपे से बाहर हो जाता हूँ । ऐसे वक्त मैं क्या क्या बोल बैठता हूँ, मुझे खुद याद नहीं रहता । लो, ये कुछ सिक्के ले लो ।" यह कहकर उसने सुधाम से फिर कहा, "मान लो, चावल में कंकड मिल जाते हैं, तो हम उन्हें चुन चुन कर निकाल देते हैं, मगर चावल के साथ हम गुस्सा नहीं करते । इसी प्रकार मेरी गालियाँ तुम भूल जाओ ।"

फिर उसी शाम को भनक मिली कि, सुधाम तैश में आकर किसी को ज़ोर ज़ोर से गालियाँ सुना रहा है । रत्नगुप्त और धनगुप्त यह ख़बर पाकर झट सुधाम के कमरे में पहुँचे । सुधाम उस वक्त चावल में से कंकड बीन रहा

चुप रह जाते हैं । हमारे देश का दारिद्र्य और कंगाली कुछ ऐसी ही है ।" धनगुप्त ने अपनी अकल का और प्रदर्शन करते हुए कहा ।

"फिर भी अकारण गाली देना ग़लत है न ? असहायता व लाचारी की वजह से वह कुछ कह नहीं पा रहा है । मगर मन ही मन हमारी जो निंदा कर रहा होगा वह शाप बनकर क्या हमारी हानि नहीं कर बैठेगा ?" रत्नगुप्त ने पूछा ।

धनगुप्त हँसकर बोला, "इस के लिये भी एक उपाय है । हमें जब ऐसा एहसास हो, कि हमने बिना वजह ही किसी को गालियाँ दी हैं, तब अपने उस नौकर को बुलाकर मीठी बातें करके उसके हाथ में एकाध चाँदी का

था ।

"अरे, तुम किसको गालियाँ सुना रहे हो ?" रत्नगुप्त ने विस्मय में आकर पूछा ।

"ये चावल बेचनेवाले साहूकार को ।" सुधाम ने जवाब दिया ।

"उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?" रत्नगुप्त ने फिर पूछा ।

पलभर रुक कर सुधाम बोला, "देखिये साहब, इन चावलों में कितने कंकड़ भरे पड़े हैं । धान में कंकड़ तो नहीं पलते ! फसल पैदा करनेवाला किसान भी तो धान में कंकड़ नहीं मिलाता; धान कूटनेवाले भी चावल में कंकड नहीं मिलाते । आखिर भूमाता भी चावल में बेमालूम मिल जानेवाले कंकड़ तैयार नहीं करती । तो इन कंकड़ों को चावल में मिलानेवाला स्वार्थी आदमी है साहूकार ! मैं जानता हूँ, कि कंकड़ों को बीन डालने पर चावल साफ़ होंगे । पर एक एक कंकड़ उठाते समय उस साहूकार को गाली न दूँ तो मेरी ईर्ष्या खतम न होगी । यह बात केवल मुझ से ही नहीं, कंकड़ मिले चावल ख़रीदनेवाले किसी और से भी पूछिये । वे खुद बताएँगे ।"

इसपर रत्नगुप्त ने सुधाम से कुछ भी नहीं कहा । धनगुप्त को साथ लेकर वहाँ से निकलकर रत्नगुप्त घर के दूसरे कमरे में गया और उसने पूछा, "रत्नगुप्त, सुन ली न सुधाम की बातें ?"

"हाँ हाँ, सुनी है । तुम्हारा नौकर सुधाम साधारण आदमी प्रतीत नहीं होता ।" धनगुप्त ने स्वीकार किया ।

रत्नगुप्त इसपर मुस्कुराकर बोला, "हर बात को लेकर हम नौकरों को गालियाँ देकर उन को फिर खुश करने के लिये इनाम दे दें, तो हमारे प्रति उनका क्रोध शान्त नहीं होता । हाँ, तात्कालिक रूप से वे खुश हो सकते हैं; बस, यही बात है ।"

धनगुप्त ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और कहा, "आज से मैं नौकरों के प्रति अपना व्यवहार बदल डालूँगा । सुधाम ने मुझे अच्छा सबक सिखाया है, पर इसके लिये मैं उसको इनाम देनेवाला नहीं हूँ, हाँ !" यह कहकर वह हँस पड़ा ।

हाथियों की पंचायत
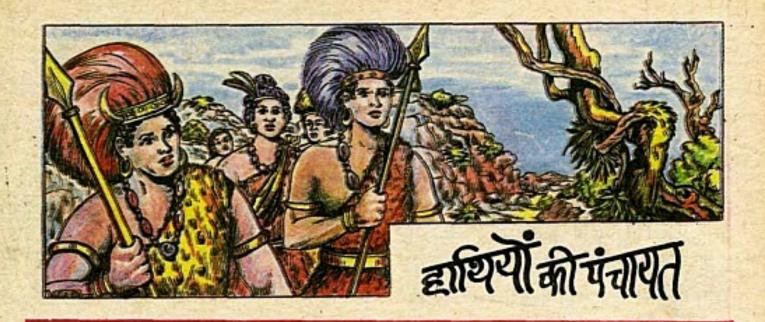
आफ्रिका में एक बहुत बड़ा सरोवर था । उसके किनारे पर एक वृद्ध अपने सात लड़के, बहुओं और उनके बच्चों के साथ रहता था । उसका नाम था रामोगी । उनकी सारी झोंपड़ियाँ मिलकर एक गाँव-सा बन गया था । रामोगी की मौत के बाद वह सारा प्रदेश बड़े लड़के के अधिकार में आ गया । अन्य सभी भाइयों को अपने परिवारों के साथ अन्यत्र कहीं रहने का प्रबंध करना पड़ा ।

भाइयों में से सब से छोटे दो भाई पोघू और अरुवा बचपन से ही मिल-जुल कर रहते थे । अगर कोई एक काम शुरू करता तो दूसरा उसकी मदद के लिए आता । यहाँ तक कि दोनों ने दो सगी बहनों से शादी कर ली थी ।

इसी आपसी विशेष प्रेम के कारण दोनों ने निश्चय किया कि अगर इस गाँव को छोड़ कर जाना पड़ा तो दोनों एक ही जगह जाएँगे और वहाँ मिलजुल कर जीवन-यापन करेंगे । ऐसा करना उनके सामाजिक रूढ़ी के खिलाफ़ था, पर दोनों ने उसकी परवाह न की ।

अब दोनों विचार करने लगे कि अपना नया निवास कहाँ पर बना लें । रामोगी के गाँव की पूरब दिशा में एक विशाल जंगल था । दोनों भाइयों ने आपस में सलाह-मश्विरा करके तय किया कि उसी जंगल के समीप अपनी झोंपड़ी बना दें और वहीं पर कुछ खेती-बाड़ी का काम करें ।

इसमें कोई शक नहीं था कि यह निर्णय बड़ा साहसपूर्ण था । क्यों कि वह जंगल अत्यन्त भयानक था । लोगों में यह अफवाह फैली थी वह जंगल जादू का है, वहाँ मंत्र-तंत्र चलते हैं । उसके अन्दर कोई मनुष्य प्रवेश करे तो वह गिरगिट या किसी अन्य प्रकार के जानवर के रूप में परिवर्तित हो जाता है । लोग यह भी जानते थे कि उन जंगल में हाथी रहते हैं और वे मंत्र-शक्तियाँ रखते हैं । उन्हें

आफ्रिका की एक लोककथा

देखते ही लोग डर के मारे काँप उठते हैं ।

ऐसे डरावने जंगल के समीप पोधु और अरुवा ने अपना निवास-स्थान बनाया और खेती-बाड़ी शुरू की । उन्होंने पहले ज्वार बोये । ज्वार में बालें खिल गयीं और फसल लहलहाने लगी ।

एक दिन अरुवा जानवरों को चराने थोड़ा बाहर निकल गया । इधर पोधू देर तक बिस्तर में लेटा रहा । यकायक बच्चे चिल्ला उठे – "हाथी आये ! हाथी !! अपने खेत में तहलका मचा रहे हैं । पोधू चाचा जागो,हाथी आये हैं । " बच्चों की यह पुकार सुनकर पोधू बिस्तर से बाहर आया । इधर-उधर देखा, जो भाला हाथ में आया उसे लेकर दौड़ता बाहर आया ।

हाथियों का एक झुंड़ ज्वार के खेत को बुरी तरह रौंद रहा था, ज्वार की फसल को सूँड़ों से उखाड़-उखाड़ कर चबा रहा था । पोधू जंगल के किनारे तक पहुँच कर ज़ोर से चिल्लाया । उसे सुनकर सारे हाथी अपना उत्पात छोड़ कर मौन हो पोधू की तरफ़ देखने लगे ।

सब से बड़े हाथी को निशाना बना कर पोधू ने अपना भाला ज़ोर से फेंका । भाला हाथी की बग़ल में जा घुसा । वह हाथी क्रोध और पीड़ा से चींकार उठा । इसके बाद सारे हाथी इस तरह जंगल के अन्दर चले गये, मानों आपस में सलाह करके किसी निर्णय पर पहुँच गये हों ।

इस घटना में अनजाने पोधू ने एक भारी
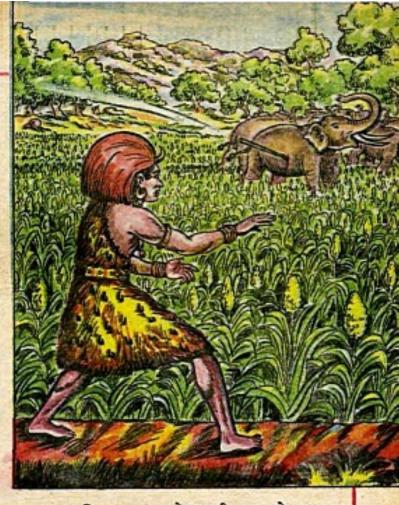
अपराध किया । उसने हाथी पर जो भाला फेंका था, वह कोई मामूली भाला न था । रामोगी के वंश में वह भाला परंपरा से चला, आ रहा था । किसी युग में नंदी जाति के लोगों ने उसे तैयार किया था और उसे मंत्र-शक्तियाँ प्राप्त थीं । आवश्यकता पड़ने पर रामोगी ने और कई भालों का प्रयोग किया था, पर उस असाधारण भाले को कभी काम में नहीं लाया । मृत्यु के समय रामोगी ने अपनी सब वस्तुएँ पुत्रों में बाँट दीं; तब यह भाला अरुवा के हिस्से में आ गया । अरुवा इस भाले को अपने प्राणों के समान समझता था । असावधानी से पोधू ने इस भाले को हाथी पर फेंक दिया था । अब वह भाला हाथी के साथ जंगल में चला गया ।

ऐसा असाधारण भाला आज ग़ायब हो गया
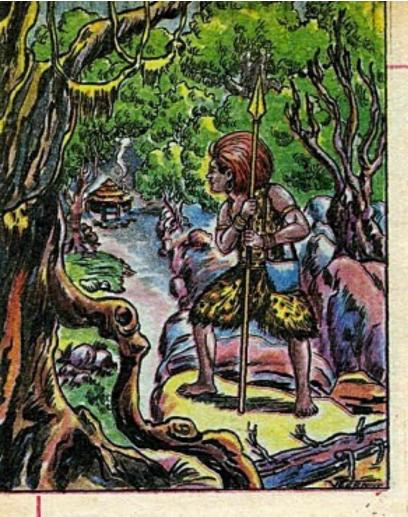
था । वह सोचने लगा – "जब अरुवा को यह समाचार मालूम होगा, तब जाने क्या होगा । मेरे लिए इस भाले को वापस ले आना कैसे संभव होगा । अगर हाथियों से लड़ाई करने गया, वे तो चले गये, पर अब भाला कैसे आएगा । अगर अरुवा गुस्सा करता है तो उसका क्या जवाब दूँ ? बड़ी मुसीबत में आ गया हूँ । अब भगवान ही बचाए इस आपत्ति से । "

अरुवा जब जानवरों को लिये घर लौटा तो उसे सारी कहानी मालूम हो गई । भाले के खो जाने से वह बहुत दुखी हुआ । गुस्से में आकर उसने पोधू से कहा – " भैया, मेरा वह भाला मुझे वापस ला दो । "

पोधू ने निवेदन किया – " अरुवा, तुम्हारा वह भाला हाथी के साथ मंत्रों वाले जंगल में चला गया, उसे अब मैं कैसे ला सकता हूँ ? उसके बदले में मैं तुम्हें उससे बढ़िया कई भाले खरीदकर दे सकता हूँ, माँग लो । "

" मुझे बस मेरा ही भाला चाहिए । और भालों से मुझे क्या काम ! वह मेरा भाला कोई मामूली भाला तो था नहीं । और यह तुम अच्छी तरह जानते भी हो । तुमने कैसे ग़लती से उस भाले को उठाया अपने हाथ में ? क्या और भाले घर में नहीं थे ? कहाँ चरने गई थी तुम्हारी अक्ल उस समय ? मेरा भाला अगर नहीं ला दोगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा । " अरुवा ने धमकी दी ।

पोधू ने कहा – " अच्छी बात है । मैं तुम्हारा भाला ला दूँगा । अगर नहीं ला सका तो मर जाऊँगा । अब हो गया न तुम्हें संतोष ? "

दूसरे दिन बड़ी सुबह पोधू नींद से जाग उठा । चमड़े की थैली कंधे पर लटकाई, एक भाला हाथ में लिया और उसने जंगल में प्रवेश किया । जंगल के भीतर हवा ठंड़ी थी, नमी थी और रोशनी धुंधली-सी थी ।

पोधू हाथियों के पद-चिन्हों से अंकित जंगली मार्ग पर दिन भर चलता रहा, पर उसको उन हाथियों का कहीं पता न चला ।

जब रात हो गई तो सर्वत्र घना अंधेरा छा गया । पोधू एक विशाल बरगद के तने की खोंड़र में जा बैठा और अपने साथ लाई ज्वार की रोटी खा ली, फिर वहीं पर सो गया । सबेरा होने पर वह पुनः हाथियों की खोज में

चल पड़ा । देर तक चलने पर वह एक छोटे मैदान पर पहुँच गया । वहाँ एक पुरानी झोंपड़ी थी । उसमें से धुआँ निकल रहा था ।

पोधू को देखते झोंपड़ी से एक बुढ़िया कुल्हाड़ी लेकर बाहर आई । सूखी लकड़ियों को काटते हुए अस्पष्ट सुरों में कहने लगी – " हाय रे मेरी क़िस्मत ! इस बुढ़ापे में मेरा हाथ बँटानेवाला कोई होता, तो मुझे यह मुसीबत काहे को झेलनी पड़ती ? "

पोधू ने बूढ़ी के पास जाकर कहा – " बूढ़ी अम्मा, आप क्यों इतने कष्ट उठा रही हैं ? मैं काट दूँ आपकी लकड़ियाँ ? " पोधू ने बूढ़ी के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली और थोड़ी ही देर में कटी लकड़ियों का ढेर लगा दिया ।

बूढ़ी ज़ोर से हँस पड़ी । उसने पोधू से कहा – " जुग जुग जिओ बेटा ! यह नहीं समझ में आया कि अपना घर छोड़ कर इस जंगल में कैसे आ गये तुम ? " इस पर पोधू ने अपनी सारी कहानी बूढ़ी को कह सुनाई ।

" बड़ा साहसपूर्ण कार्य स्वीकार किया है बेटा तुमने ! मैं बेचारी तुम्हारी क्या मदद कर सकूँगी ? फिलहाल तुम लकड़ी काटते मेरे पास रह जाओ । देखूँगी !" बुढ़िया ने हल्कासा आश्वासन दिया ।

इसके बाद पोधू एक महीने तक बूढ़ी के पास रहा । वह दिन भर लकड़ियाँ काटता रहता । बूढ़ी सारा दिन पोधू को भला - बुरा कहती रहती । समय असमय उसे कंबख्त, आलसी, नालायक कह कर डाँटती रहती ।
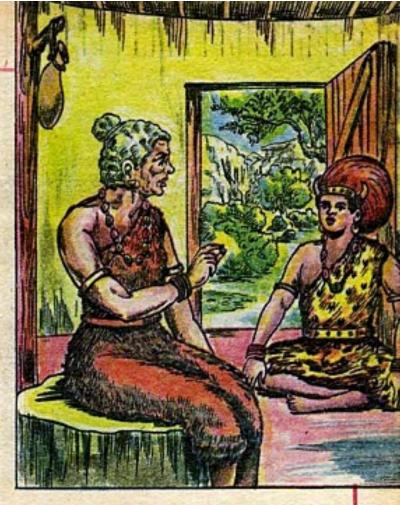
आखिर पोधू ने सोचा कि बुढ़िया से किसी सहायता की अपेक्षा करना बेकार है । इस तरह यहाँ रहकर कोई फायदा दिखाई नहीं देता । ऐसे में एक दिन बूढ़ी ने पोधू को अपने पास बैठाकर समझाया – " देखो बेटा, यों मत सोचना कि अब तक का सारा समय व्यर्थ गया ! अगर तुम में साहस, सहनशीलता और परोपकार वृत्ति ये तीनों गुण न हों, तो हाथियों से अपना काम कैसे साध सकोगे ? ये गुण तुम में हैं या नहीं इसकी मैंने अब तक जाँच की, समझे ? तुमने एक हाथी के साथ घोर अन्याय किया है । तुमने हाथियों के साथ जो व्यवहार किया उसे वे कभी भूल नहीं सकते इसका ध्यान रखो । इस लिए तुम्हारी मदद के लिए मैं तुम्हें एक छोटी - सी चीज़ देती हूँ । " यों कहते हुए बूढ़ी ने एक नीले रंग का शीशे का मनका पोधू के हाथ
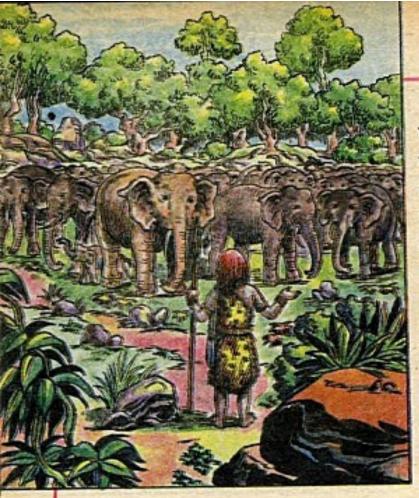
में रखा ।

बूढ़ी के मार्गदर्शन के अनुसार चल कर पोधू चार घंटों में हाथियों के प्रदेश में पहुँचा । जंगल के बीच एक विशाल मैदान पर हाथी निवास करते थे । उस मैदान के चारों ओर उखाड़े गये वृक्ष एक के ऊपर एक रख कर मानों दीवार - सी बनाई गई थी ।

पोधू ने देखा उस अहाते में हज़ारों हाथी - छोटे और बड़े, नर और मादा रह रहे हैं । उनके बीच एक छोटे पहाड़ के समान एक बूढ़ा नर - हाथी था । शायद वही उन हाथियों का राजा था ।

पोधू हाथियों के राजा के पास पहुँचा और एक अपराधी के समान सिर झुका कर खड़ा हो गया ।

हाथियों के राजा ने कुछ कहा । पोधू को लगा कि वह उससे पूछ रहा है - " तुम किस काम के लिए यहाँ आये हो ? " पोधू ने हिम्मत से सिर उठाकर ऊँची आवाज़ में जवाब दिया, ताकि सारे हाथी उसकी बातों को समझ सकें - " हाथियों, तुम लोग जब मेरे खेत में चरने आये थे, तब मैंने तुम्हारे साथ बड़ा निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया । मुझे इस बात का दुख है । मैंने अपने भाई के भाले को तुम में से एक पर फेंक दिया था । वह भाला तुम्हारे साथ इधर आया है । मेरा भाई मुझे धमका रहा है कि अगर मैं उसे उसका भाला न दूँ, तो वह मुझे मार डालेगा । अब तुम लोग या तो मेरा भाला मुझे लौटा दो या मेरे प्राण ले लो । मेरे लिए दोनों बराबर है । "

कुछ देर तक हाथी मौन रहे । फिर हाथियों के राजा ने कुछ कहा, अन्य हाथियों ने कुछ जवाब दिया । इसके बाद दो हाथी पोधू को एक वृक्ष की छाया में ले गये ।

तब हाथियों की पंचायत बैठी । पर शीघ्र कुछ फैसला न हो पाया । बीच बीच में बराबर हाथियों का चिंघाड़ना सुनाई देता रहा ।

आखिर ऐसा लगा कि हाथियों की पंचायत समाप्त हो गई । तब हाथी पोधू को अपने राजा के पास ले गये । हाथियों के राजा ने कुछ आदेश दिया । राजा का आदेश पाकर हाथी पोधू को एक पेड़ के पीछे ले गये । वहाँ पर कई भाले पड़े थे । पोधू ने अपना भाला पहचान लिया । उसे उसने अपने हाथ में ले लिया और नतमस्तक हो हाथियों को

प्रणाम किया । हाथियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए वह अपने घर की ओर लौटने को हुआ ।

वापसी यात्रा में उसे बुढ़िया की झोंपड़ी नज़र न आई । संभवतः वह रास्ता भटक गया था। इस कारण बुढ़िया ने उसें जो नीले रंग का काँच का मनका दिया था, वह उसीके पास रह गया । रास्ता भटकने की वजह से पोधू को अपने घर पहुँचने में तीन दिन लग गये ।

अपने भाले को वापस पाकर अरुवा बहुत प्रसन्न हुआ । पोधू ने सब को अपनी यात्रा का हाल सुनाया और बुढ़िया का दिया नीला मनका दिखाया । हरेक ने उसे परख कर देखा और आश्चर्य व आनन्द प्रकट किया । इसके बाद जब लड़के एक एक करके मनका देखने लगे, तो अरुवा के छोटे लड़के ने उसे मुँह में डाल कर निगल लिया ।

लोगों में बहुत कोलाहल मचा । पोधू की पत्नी ने बच्चे को पीटा । पर उससे क्या होता है ?

पोधू ने अरुवा से कहा – " मेरे प्यारे छोटे भय्या, मैंने जब तुम्हारा भाला खो दिया, तब तुमने मुझे मार डालने की धमकी दी थी । मैं अपनी जान की बाज़ी लगाकर जंगल में गया और किसी प्रकार उसे वापस लाया । अब मेरे मंत्र - फूँके मनके को तुम्हारे बेटे ने निगल डाला । अब तुम्हारे पास इसका क्या जवाब है भला ? "

अरुवा ने कहा – " कल ही मैं किसी दूसरी जगह चला जाऊँगा । हमारा बँटवारा होना ही उत्तम है । कहावत है – कुत्ते व बिल्ली सह-जीवन कर सकते हैं, पर दो सगे भाई मिलजुलकर नहीं रह सकते । मैं अपना घर अलग बना लेता हूँ । "

" बस, ऐसा ही करो । पर एक शर्त – मनका निगलनेवाले तुम्हारे लड़के को मुझे दे दो । " पोधू ने माँग की ।

अरुवा ने अपने बड़े भाई की बात मान ली । अपने लड़के को पोधू के हाथ सौंप कर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अरुवा दूसरे स्थान की खोज में निकल पड़ा ।

बिम्ब और प्रतिबिम्ब
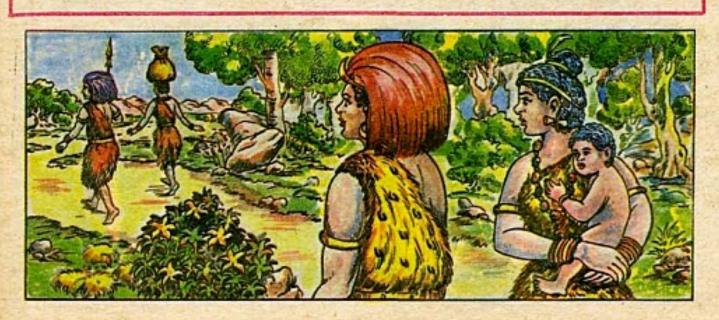
विशाल नगर पर धर्मचन्द नाम का राजा राज्य करता था । प्रतिदिन सुबह-शाम वह अपने महल के छत पर जाता, वहाँ पर शीतल-वायु का सेवन करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त की शोभा वह अवलोकन करता था । वह मानता था कि उगते और डूबते सूरज की किरणें आँखों पर अच्छा असर करती हैं । अतः वह एक टक सूरज की ओर देखता रहता । सचमुच ढलती उमर में भी उसकी दृष्टि बहुत अच्छी रही । सुबह शाम की ठंडी हवा सेवन करने से भी उसका स्वास्थ्य बहुत ठीक रहता ।

एक लकड़हारा हररोज़ सबेरे राजमहल से होकर लकड़ी काटने जंगल की ओर जाता और फिर शाम को वह लकड़ी का बोझ सिर पर रखकर लौट आता था ।

राजा को हररोज सुबह-शाम वह लकड़हारा दिखाई देता था । सबेरे जंगल की ओर जानेवाले लकड़हारे को देख राजा सोचता था, "अरे, बेचारा कितना दरिद्र है ! देखने में तो कंकाल जैसा है; शायद, कड़ी मेहनत करने पर ही अपना पेट भर सकता है । " उसके प्रति राजा के मन में दया उत्पन्न होती थी । पर शाम को जब वही लकड़हारा लकड़ियाँ सिर पर लादकर लौट आता, तब उसे देख राजा के मन में न मालूम क्यों, असहनीय क्रोध पैदा हो जाता था । उसके मन में आता, "इस मनहूस का वध कर दें, तब भी कोई दोष नहीं होगा । "

राजा की समझ में नहीं आता था कि एक ही व्यक्ति के बारे में अपने मन में सबेरे एक प्रकार का और शाम को बिलकुल उसके विपरित भाव क्यों पैदा होता है । उसे अपने इस द्विधा विचारों पर बड़ा ही आश्चर्य होता था । आख़िर राजा ने अपने मन्त्री को बुलाकर अपना अनुभव सुनाया और कहा कि उसके मन में ये

२५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

जो परस्पर-विरोधी भाव पैदा होते हैं, उसका कारण ढूँढ़ लें ।

मन्त्री ने राजा से तीन दिन की अवधि माँग ली । मंत्री सोचने लगा कि अब राजा के प्रश्न का उत्तर कैसे ढूँढ़ निकाले ? उसको एक तरकीब सूझी ।

दूसरे दिन मन्त्री एक गरीब आदमी का वेष धर कर लकड़हारे के पीछे जंगल में गया; दिन भर उसे कड़ी मेहनत करते देखता रहा और शाम को उसी के पीछे पीछे लौट आया ।

मन्त्री की समझ में यह बात आ गयी, कि उस लकड़हारे को देखने पर राजा के मन में दया भाव क्यों पैदा होता है; मगर शाम को उसे देखने पर क्रोध क्यों उत्पन्न होता है यह तो उसकी समझ में नहीं आया ।

दूसरे दिन एक साधू का वेष धर कर मन्त्री लकड़हारे के घर की ओर चल पड़ा । साधू को ड्योढ़ी के पास देख लकड़हारे की पत्नी ने सादर उसका स्वागत किया और उसको आसन देकर दण्डवत् प्रणाम किया । लकड़हारे के घर के अन्दर से चन्दन की लकड़ी की तीखी सुगन्ध मन्त्री ने महसूस की ।

"लगता है, तुम्हारे घर में चन्दन पर्याप्त मात्रा में है बेटी । उसे बेचकर आराम से अपने दिन क्यों नहीं काटते तुम लोग ? इस प्रकार कष्ट झेलने से क्या मतलब ?" लकड़हारे की पत्नी के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए साधु ने पूछा ।

"साधुमहाराज, कहीं बोलना नहीं । मेरे पति जब जंगल से लकड़ी काटते हैं, तो एकाध बार चन्दन की लकड़ी भी हासिल हो जाती है । इस प्रकार मिला सारा चन्दन हम ने एक कमरे

में रखा है । सुनिये, कभी न कभी राजा की मृत्यु होगी न ? तब उनके दहन-संस्कार के लिये चन्दन की लकड़ी की ज़रूरत होगी ही ? ऐसे वक्त हमें इस चन्दन का मुँह माँगा दाम मिल सकता है । इसलिये यह चन्दन इधर-उधर फुटकर बेचने के बदले हमने जमा कर रख दिया है । '' लकड़हारे की पत्नी के दिल की बात साधु पर प्रकट कर दी ।

अब मन्त्री समझ गया, कि लकड़हारे के प्रति राजा के मन में क्रोध क्यों पैदा होता है । लकड़हारा सुबह जब जंगल की ओर जाता है, तब उसके मन में अपने दारिद्र्य के विचार रहते हैं । उस वक्त वह केवल यही सोचता है कि अपने परिवार के भरण-पोषण का कल का खर्च निकल आये तो वह संतुष्ट होगा । उस समय राजा को उसकी हालत पर दया आती है ।

मगर वही लकड़हारा शाम को अपना काम पूरा करके लौटता है, तब अपने घर में छिपा कर रखे चन्दन की उसे याद आती है और वह सोचता है कि राजा का देहान्त शीघ्र हो जाय, तो ख़ासी अच्छी रक़म हाथ आयेगी । और ऐसे समय ही उसे देख राजा के मन में उसके प्रति क्रोध पैदा होता है ।

इससे यह स्पष्ट है कि लकड़हारे के मन के भाव और राजा के भाव बिम्ब और प्रतिबिम्ब हैं ।

इसके बाद मन्त्री लकड़हारे की पत्नी से बिदा लेकर अपने घर लौट पड़ा । दूसरे दिन वह हमेशा के जैसा दरबार में हाज़िर रहा । तब राजा ने मन्त्री से पूछा, "मन्त्री महोदय, क्या रहस्य का कुछ पता चला है ?"

"हाँ महाराज, मैंने असली बात जान ली है । आप यदि मुझे यह वचन दे दें कि आप लकड़हारे को दण्ड न देंगे, तो मैं अभी वास्तविकता का परिचय करा देता हूँ । '' इन शब्दों के साथ मन्त्री ने राजा को सारा वृत्तान्त सुनाया ।

राजा ने जान लिया, कि लकड़हारा दरिद्र है, इसलिये प्रतिदिन वह राजा की शीघ्र मृत्यु की कामना करता है । इस के बाद लकड़हारे को बुलाकर राजा ने उसे डाँटा और आराम से उसकी जिंदगी बसर हो, इतना धन उसे दे दिया ।
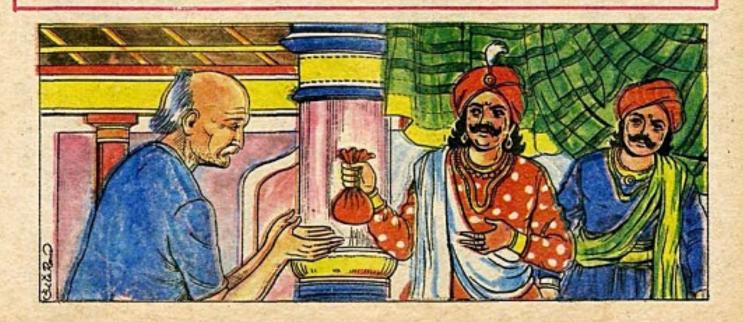
प्रकृति के करिश्मे

बिना रीढवाले जानवरों में सब से अधिक वज़नदार है अटलांटिक का - जायेंट स्क्वीड नामक विचित्र जलचर ! इस बात के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, कि ५५ फुट लम्बे व २ टन वज़नवाले स्क्वीड भी पाये जाते हैं । कुछ लोगों का कथन है, कि उन्होंने १७५ फुट लम्बे स्क्वीड को भी देखा है । बाकी सभी जानवरों से इस जानवर की आँख की पुतली खूब बड़ी होती है । एक एक पुतली का व्यास १५ इंच तक होता है, इसके माने है - फुटबॉल से दुगुने ! इन जानवरों के शरीर में अत्यधिक नसें होती हैं । इनकी नसें मनुष्य की नसों से ५०० गुना मोटी होती हैं ।

इन जलचरों के प्रधान शत्रु हैं - तिमिंगल ! कतिपय तिमिंगलों के शरीर पर स्क्विड के प्रहार के कारण बने १८ इंच व्यास तक के घाव पाये गये हैं ।
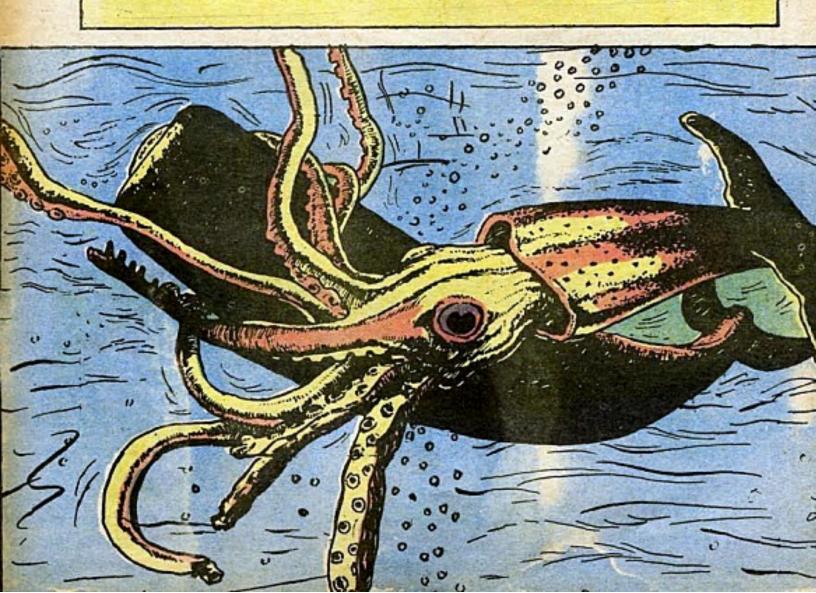
अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरूआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सैरेलैक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलैक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलैक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलैक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलैक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ्त! सैरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जुलाई १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।
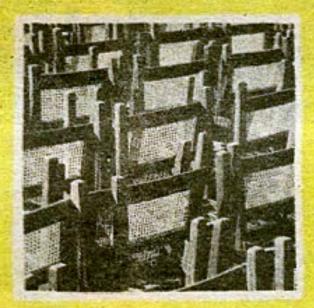
S. G. Seshagiri

A. L. Syed

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ मई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मार्च के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : रही छवि निहार!

द्वितीय फोटो : मैं भी करूँ श्रृंगार!!

प्रेषक : ताराबाई एम्., मकान नं. २९२८/बी, बेंगलूर-ऊटी रोड, मैसूर-५७०००१

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

In your APRIL issue of ...

Where finding out is fun